रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003--05

REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 46] नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 17—नवम्बर 23, 2007 (कार्तिक 26, 1929)

No. 46] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 17—NOVEMBER 23, 2007 (KARTIKA 26, 1929)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं 1061

भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी को गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 1137

भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 3

भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी को गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं ... 1773

भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम ..... *

भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ ..... *

भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट ..... *

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल है *

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं..... *

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप को उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)..... *

भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश ..... *

भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं 5945

भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टें और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस 753

भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं ..... *

भाग III—खण्ड-4—विधिक अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं 11459

भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस 693

भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक ..... *

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 1061

PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 1137

PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence..... 3

PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence..... 1773

PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations..... *

PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi languages of Acts, Ordinances and Regulations ..... *

PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills..... *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules including Orders, Bye-laws, etc. of general character issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)..... *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)..... *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) ..... *

PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence ..... *

PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India 5945

PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs..... 753

PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners..... *

PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies..... 11459

PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies 693

PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi..... *

*Folios not received.

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]
[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]
[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 2007

सं. 162-प्रेज/2007--राष्ट्रपति अति असाधारण वीरतापूर्ण कार्यों के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों को "अशोक चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करती हैं :--

आईसी-62541 कैप्टन हर्षन आर
2 पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल) (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 मार्च 2007)

कैप्टन हर्षन आर उत्तर कश्मीर में विदेशी आतंकवादियों का लगातार खोजने का कार्य कर रहे थे। 07 मार्च 2007 को इस अफसर ने दुर्गम भू-भाग के बावजूद खोज कार्य के लिए अपने दल का शीघ्रता से गठन किया और अकेले ही दो आतंकवादियों को मार गिराया जिनमें से एक उत्तर कश्मीर में एक आतंकवादी गुट का मुखिया था।

20 मार्च 2007 को विशेष जानकारी के आधार पर कैप्टन हर्षन आँधी-पानी और लगातार बर्फबारी की परवाह न करते हुए अपनी सैन्य-टुकड़ी के साथ संदिग्ध मकान की ओर चल दिए और उसकी घेराबन्दी कर दी। 04.30 बजे चार आतंकवादियों ने घेराबन्दी तोड़ने का प्रयास किया और वे कैप्टन हर्षन और उनके साथी की तरफ गोलाबारी करते हुए दौड़ पड़े। संख्या में अधिक होने के बावजूद कैप्टन हर्षन ने धैर्य रखा और घटनास्थल पर एक आतंकवादी को मार गिराया परंतु गोली लगने से उनकी जंघा जख्मी हो गई। अपने जख्मों की परवाह न करते हुए उन्होंने असाधारण वीरता का प्रदर्शन करके दूसरे आतंकवादी को भी मार गिराया जो उन पर गोलीबारी कर रहा था। इस कार्रवाई में, दूसरी गोली लगने से उनकी गर्दन जख्मी हो गई। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने आतंकवादियों को उलझाए रखा और अपने जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त होने से पहले उन्होंने तीसरे आतंकवादी को घायल कर दिया जो बाद में मारा गया।

कैप्टन हर्षन ने इन दो वीरतापूर्ण कार्यों में अदम्य साहस का परिचय दिया जिनमें उन्होंने व्यक्तिगत-तौर पर चार आतंकवादियों का सफाया किया।

कैप्टन हर्षन आर ने उच्चतम कोटि के नेतृत्व का परिचय दिया तथा अत्यंत विषम परिस्थितियों में असाधारण साहस का प्रदर्शन किया और आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

जेसी-593527 नायब सूबेदार चुनी लाल, वीर चक्र, सेना मैडल
8 जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 जून 2007)

24 जून, 2007 का उत्तरी क्षेत्र में आतंकवादियों के एक गुट की संभावित घुसपैठ के बारे में सूचना मिलने पर नायब सूबेदार चुनी लाल ने मार्ग रोकने के लिए घात टुकड़ियों को पुनः व्यवस्थित किया। 07.00 बजे खोज कार्य की अगुवाई करते समय नायब सूबेदार चुनी लाल के छोटे दल पर छिपे हुए आतंकवादियों ने प्रभावी गोलीबारी की। उन्होंने तुरंत जवाबी कार्रवाई की और बच निकलने के सभी रास्तों को बन्द करने के लिए अपने सैनिकों को युक्ति से व्यवस्थित किया। शिलाखंडों के पीछे छिपे एक आतंकवादी को देखकर वे कुशलता से निकट गए और उसे बिल्कुल पास से गोली मार दी। दूसरे आतंकवादी ने उनके दल की हरकत देखी और कारगर गोलीबारी की जिसमें दो सैनिक घायल हुए। आतंकवादियों की ओर से कारगर गोलीबारी के बावजूद नायब सूबेदार चुनी लाल ने दोनों हताहतों को वहां से अकेले ही निकाल लिया। उन्होंने पुनः कमान संभाली और आगे तलाश शुरू की तथा दूसरे आतंवादी का सफाया कर दिया। यह देख अन्य आतंकवादियों ने संपर्क तोड़ने का प्रयास किया। आतंवादियों के बच निकलने की संभावना को भांपते हुए वे बच निकलने के रास्ते को रोकने के लिए शीघ्रता से आगे बढ़े। शेष आतंकवादियों ने कारगर गोलीबारी की। स्थिति की नाजुकता और अधिक हताहत होने की संभावना का महसूस करते हुए नायब सूबेदार चुनी लाल ने निर्भीकता से गोलीबारी की दिशा में हमला बोल दिया जिसके कारण घटनास्थल पर एक और आतंकवादी ढेर हो गया। तथापि, उनके ऊरु और पेट के निचले हिस्से में गोलियां लगने से कई जख्म हो गए। अत्यंत रक्तस्राव के बावजूद उन्होंने आतंकवादियों के बच निकलने के रास्तों को रोकते हुए उन पर गोलीबारी जारी रखी और अपने साथियों को आगे बढ़ने के लिए कहा जिसके परिणामस्वरूप बचे हुए दो दुर्दान्त आतंकवादियों का सफाया हुआ और बहुत से सैनिकों की जान बची।

नायब सूबेदार चुनी लाल ने व्यक्तिगत-तौर पर तीन आतंकवादियों का सफाया करके और इस संपूर्ण अभियान में कुल मिलाकर पांच आतंकवादियों को मार गिराने में अपने छोटे दल को प्रेरित करके असाधारण वीरता, साहस का प्रदर्शन किया और भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप सर्वोच्च बलिदान दिया।

आईसी-48714 कर्नल वसंत वेनुगोपाल
9 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 जुलाई 2007)

कर्नल वसंत वेनुगोपाल जम्मू-कश्मीर के उड़ि क्षेत्र में ऊबड़-खाबड़ और दुर्गम भू-भाग में नियंत्रण रेखा पर तैनात एक बटालियन की कमान कर रहे थे।

30 जुलाई 2007 को नियंत्रण रेखा के पार से आतंकवादियों की घुसपैठ की सूचना मिलने पर कर्नल वसंत वेनुगोपाल ने सैनिकों की एक टुकड़ी की कमान व्यक्तिगत-तौर पर संभाली, तेजी से आगे बढ़े और आतंकवादियों के घुसपैठ करने वाले गुट को बीच में रोक दिया जो पता चल जाने पर नियत्रंण रेखा के पार पीछे से बच निकलने का प्रयास कर रहे थे। इस हलचल को पहले से भांपते हुए कर्नल वेनुगोपाल ने पक्के इरादे और दृढ़-नेतृत्व का परिचय देते हुए अपने सैनिकों को बच निकलने के रास्ते रोकने के लिए दक्षता से संगठित किया। घने बेल-बूटों का फायदा उठाकर आतंकवादियों ने भागकर जंगल में छिप जाने की कोशिश की। कर्नल वेनुगोपाल ने अपनी सैन्य टुकड़ी की सामने से अगुवाई की और आतंदवादियों पर निकटता से भीषण गोलीबारी करते हुए उन्हें उलझाए रखा। थका देने वाली यह लड़ाई पूरे दिन और रात चली परन्तु रात के अन्धेरे तथा बेल-बूटों की आड़ लेकर आतंकवादियों के बच निकलने के सभी प्रयास विफल करने में सफलता मिली। 31 जुलाई 2007 को सुबह कर्नल वेनुगोपाल ने पहली किरण का लाभ उठाने की इच्छा से अपने व्यक्तियों को इक्ट्ठा किया और उन आतंकवादियों को, जो मजबूत स्थिति बनाने में सफल हो गए थे, खदेड़ने के लिए इस अभियान की व्यक्तिगत-तौर पर अगुवाई की। आतंकवादी ठिकाने पर पीछे से हमला करते हुए कर्नल वेनुगोपाल ने निकट से आतंकवादियों को उलझाए रखा और एक आतंकवादी को मार गिराया परन्तु स्वयं जख्मी हो गए। अपनी चोट और अत्यंत रक्तस्राव की परवाह न करते हुए उन्होंने अपने व्यक्तियों को बच निकलने के सभी रास्तों को बन्द करने के लिए प्रोत्साहित किया और बचकर भाग निकलने की कोशिश कर रहे दूसरे आतंकवादी को मार गिराया। इसी बीच, एक आंतकवादी ने ताबड़-तोड़ गोलीबारी कर दी जिसमें कर्नल वेनुगोपाल को चोट आई। अपनी आखिरी बची हुए ऊर्जा को संजोते हुए अचेत होने से पहले कर्नल वेनुगोपाल ने निर्भीकता से आतंकवादी पर गोलीबारी की और उसे ढेर कर दिया। तथापि, अपने जख्मों के कारण वे बाद में वीरगति को प्राप्त हुए और मातृभूमि के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

इस प्रकार, कर्नल वसंत वेनुगोपाल ने उत्कृष्ट बहादुरी, साहस और अड़िग नेतृत्व का परिचय दिया जिसके परिणामस्वरूप, आठ विदेशी आतंकवादियों के पूरे गुट का सफाया करने में उनके व्यक्तियों ने दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

बरूण मित्रा
संयुक्त सचिव

सं. 163-प्रेज/2007--राष्ट्रपति असाधारण वीरतापूर्ण कार्यों के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों को "कीर्ति चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करती हैं :--

श्री दयानंद पांडेय
उत्तर प्रदेश (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 01 अगस्त 2005)

01 अगस्त 2005 को 10.30 बजे डाक सहायक श्री दयानंद पांडेय बसखारी उप-डाकघर, फैज़ाबाद में ड्यूटी पर थे। अचानक तीन लुटेरे सरकारी धन को लूटने की मंशा से डाकघर में आ घुसे। उस समय डाकघर में 3,38,400/- रुपए की नकदी पड़ी थी। लुटेरों ने श्री पांडेय पर गोलियां चलाई। तथापि, अपनी चोटों की परवाह किए बिना श्री पांडेय ने बहादुरी के साथ लुटेरों का विरोध किया। श्री पांडेय के विरोध को देखते हुए लुटेरे कुछ नकदी लेकर भाग खड़े हुए। श्री पांडेय के साहसपूर्ण कार्य से धन के एक बड़े हिस्से का बचाव हुआ जिसके लिए उन्होंने अपनी जान की बाजी लगा दी।

श्री दयानंद पांडेय ने लुटेरों के साथ लड़ते हुए असाधारण साहस और बहादुरी का परिचय दिया और सरकारी धन को बचाने में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

श्री मोहम्मद शान अहमद
उत्तर प्रदेश (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 दिसम्बर 2005)

26 दिसम्बर 2005 को श्री मोहम्मद शान अहमद को, जो प्रधान डाकघर, झांसी (उ. प्र.) में रोकड़ निरीक्षक के रूप में तैनात किए गए थे, समीपस्थ स्टेट बैंक में 16,02,000/- रुपए जमा करने के लिए सौंपे गए थे। वे नकदी भरे थैले को उठाने वाले अन्य डाक-कर्मियों के साथ आटोरिक्शा में जा रहे थे जबकि चार अन्य डाक-कर्मी मोटर साइकल पर उनकी सुरक्षा में साथ चल रहे थे। जब ऑटोरिक्शा बैंक के निकट पहुंचा तो उस पर कुछ हथियारबंद शरारती तत्वों ने हमला कर दिया। ड्राईवर को लगी गोली देखकर साथ चल रहे व्यक्ति डर के मारे भाग खड़े हुए। फिर भी, श्री अहमद ने लुटेरों को थैला सौंपने से इंकार कर दिया और सरकारी धन की रक्षा करने के लिए तब तक बहादुरी के साथ लड़ते रहे जब तक उनके सीने में गोली नहीं आ लगी और उसके बाद वे गिर पड़े। लुटेरों ने उनके हाथों से थैला छीना और भाग खड़े हुए। श्री अहमद बाद में घातक चोटों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

श्री मोहम्मद शान अहमद ने असाधारण वीरतापूर्ण कार्य, अदम्य साहस और असाधारण कर्तव्यपरायणता, अपनी स्वयं की सुरक्षा की परवाह न करने का परिचय दिया और लुटेरों के विरूद्ध लड़ते अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

श्री तरुण कुमार दत्त
असम (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 सितम्बर 2006)

श्री तरुण कुमार दत्त ने शिलांग क्षेत्र में नशीले पदार्थों की तस्करी को जांच करने के लिए अनेक निर्भीक और तेज-तर्रार कार्रवाइयां की। वे 97,465 कि. ग्रा. गांजा, 100 कि. ग्रा. एफिड्रिन और 6.5 कि. ग्रा. हशीश की बरामदगी में सहायक थे। उन्होंने दुर्गम जंगलों, पर्वतीय भू-भागों और विद्रोहिता बाधित क्षेत्रों में संक्रियाओं का नेतृत्व किया। वे नशीले

पदार्थों के उत्पादक-संघों के विरुद्ध अपनी जान की परवाह किए बिना नशीले पदार्थों की तस्करी की महामारी का उन्मूलन करने के उद्देश्य से कार्य कर रहे थे। ऐसा करते हुए माफिया ने उन्हें अपना निशाना बना लिया था और उन्हें 12 सितम्बर 2006 को मार दिया।

श्री तरुण कुमार दत्त ने अपने पूरे सेवाकाल में बेजोड़ कर्तव्यपरायणता, असाधारण साहस और उत्कृष्टता का परिचय दिया और राष्ट्र के हित में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

3995047 नायक राधाकृष्णन सी.
10 मद्रास रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 अक्तूबर 2006)

18 अक्तूबर 2006 को 07.00 बजे कुपवाड़ा जिले (जम्मू-कश्मीर) के एक क्षेत्र में निगरानी टुकड़ी ने संदिग्ध हलचल देखी। बच निकलने के रास्तों पर अवरोध लगा दिए गए थे और सघन तलाशी शुरू की गई थी। नायक राधाकृष्णन सी. तलाशी दल के कमांडर थे।

जब दुर्गम भू-भाग में सफाया अभियान जारी थे तो नायक राधाकृष्णन सी. को आतंकवादियों का पता चला और संदिग्ध हलचल देखी और तत्काल आसपास के अन्य तलाशी दलों को इसकी सूचना दी। चूंकि प्रतिक्रिया के लिए अधिक समय नहीं था इसलिए नायक राधाकृष्णन तत्काल झाड़ियों में कूद पड़े और उन आतंकवादियों के साथ संपर्क साधने की कोशिश की जो घेरे को तोड़कर बच निकलने की कोशिश कर रहे थे। निकट से जारी गोलीबारी में उन्होंने एक आतंकवादी को मार गिराया। परन्तु इस कार्रवाई के दौरान आतंकवादियों पर साहसिक हमले में व गंभीर रूप से जख्मी हो गए। अन्य आतंकवादियों ने बहादुर सिपाही की आक्रामक भावना और निर्भीक इच्छाशक्ति को भांपते हुए उन पर अंधाधुंध गोलीबारी करके और हथगोले फैंककर संपर्क तोड़ने का प्रयास किया। दोनों ओर से भारी गोलीबारी और अपनी चोटों की गंभीरता के बावजूद नायक राधाकृष्णन ने निकट संपर्क बनाए रखा, आतंकवादियों पर वापस गोलीबारी की तथा उन पर शिकंजा कस दिया। उसके बाद साहस, धैर्य और पक्के इरादे का परिचय देते हुए वे रेंगकर आगे बढ़े और आतंकवादियों पर हथगोले फैंके जिससे अन्य दो आतंकवादी मारे गए। संपूर्ण गोलीबारी के दौरान नायक राधाकृष्णन ने घायल होने के बावजूद वापस आने अथवा चिकित्सा सहायता के लिए ले जाए जाने से इंकार कर दिया। नायक राधाकृष्णन को बाद में वहां से विमान द्वारा ले जाया गया परन्तु अपने जख्मों के कारण मार्ग में ही उनकी मृत्यु हो गई और मातृभूमि की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

नायक राधाकृष्णन सी. ने आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ते हुए अपनी जान को जोखिम में डालकर असाधारण वीरता, अडिग धैर्य और दृढ़ साहस का परिचय दिया।

आईसी-67341 लेफ्टिनेंट पंकज कुमार
7/11 गोरखा राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 05 अप्रैल 2007)

क्षेत्र में आतंकवादियों की संभावित हलचल की पक्की सूचना के आधार पर लेफ्टिनेंट पंकज कुमार पूर्वी क्षेत्र के एक क्षेत्र में 05 अप्रैल, 2007 को 01.00 बजे एक तलाशी और विध्वंसक मिशन पर एक दल के साथ रवाना हुए।

जब लेफ्टिनेंट पंकज कुमार दो अन्य रैंकों के साथ तलाशी के लिए एक झोंपड़ी की ओर बढ़ रहे थे तो झोंपड़ी से दो आतंकवादी गोलीबारी करते हुए बाहर कूदे। एक आतंकवादी ने इस अफसर पर एक हथगोला भी फैंका। लेफ्टिनेंट पंकज कुमार ने तत्काल जवाबी गोलीबारी की और भीषण गोलाबारी में एक आतंकवादी को ढेर कर दिया।

इसी बीच, नजदीक की झोंपड़ियों में छिपे हुए छह अन्य आतंकवादियों ने भी गोलीबारी शुरू कर दी और पास के जंगल की ओर भागना शुरू कर दिया। लेफ्टिनेंट पंकज कुमार ने भाग रहे आतंकवादियों पर भारी मात्रा में सटीक गोलीबारी करते समय अपने घेरे को पुनर्व्यवस्थित किया। इन्होंने जंगल में लगभग 1.5 कि. मी. से अधिक दूरी तक दो आतंकवादियों का पीछा किया और उनके द्वारा हथगोला फैंके जाने के बावजूद उन्हें मार गिराया।

लेफ्टिनेंट पंकज कुमार ने आतंकवदियों के विरुद्ध लड़ते हुए असाधारण वीरता, अनुकरणीय नेतृत्व और निःस्वार्थ समर्पण भावना का परिचय दिया।

एसएस-41287 कैप्टन अभिनव हाण्डा
9, मराठा लाइट इन्फैन्ट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 जुलाई 2007)

30 जुलाई, 2007 को जम्मू-कश्मीर के उड़ि क्षेत्र में नियंत्रण रेखा के पार से आतंकवादियों की घुसपैठ की सूचना के आधार पर कैप्टन अभिनव हाण्डा शीघ्रता से घटना स्थल की ओर चल दिए और उस घातक दल की कमान कर रहे थे जिसने आतंकवादियों का पीछा करके घेराबंदी की और उसके बाद उन आतंकवादियों के सफाए के अभियान चलाए जो छोटा काजीनाग धार की दुर्गम जोखिमभरी अत्यधिक ऊंची पहाड़ियों में चट्टानी गुफा में छिपने में सफल हो गए थे। इस अभियान के आगे बढ़ने के साथ-साथ आतंकवादियों के साथ सघन गोलीबारी हुई और थका देने वाली यह लड़ाई बहत्तर घंटे चली। इस अवधि के दौरान कैप्टन हाण्डा लगातार सटीक कवरिंग फायर की हिदायत देते रहे जिससे उनके कमान अफसर के नेतृत्व में त्वरित कार्रवाई सैन्य-टुकड़ी तीन आतंकवादियों का सफाया कर सकी। 31 जुलाई, 2007 को आतंकवादियों की गोली लगने से कमान अफसर के बहादुरी के साथ गिर पड़ने के बाद कैप्टन हाण्डा ने अनुकरणीय नेतृत्व क्षमता, मानसिक दक्षता, जमीन पर संक्रिया का कार्यभार लेने के लिए अत्यंत विषम स्थितियों में धैर्य का परिचय दिया। चट्टानी गुफा के भीतर खंदकों से आतंकवादी हथगोलों और स्वचालित राइफलों से निचली ओर हमारे सैनिकों पर लगातार कारगर गोलीबारी कर रहे थे। सूझबूझ का परिचय देते हुए कैप्टन हाण्डा आतंकवादियों के ठिकाने के निकट गए और भीषण गोलीबारी के बाद एक विदेशी आतंकवादी को मार गिराने में सफल हुए।

कैप्टन अभिनव हाण्डा ने अत्यंत प्रतिकूल स्थितियों में उत्कृष्ट नेतृत्व, अडिग साहस का परिचय दिया और आगे रहकर नेतृत्व करते हुए इस संक्रिया को सफलतापूर्वक नियंत्रित किया।

बरुण मित्रा
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

सं. 164-प्रेज/2007--राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करती हैं :--

737836 सार्जेंट जय प्रकाश शुक्ला
लिपिक सामान्य ड्यूटी (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 अगस्त 2006)

सार्जेंट जय प्रकाश शुक्ला वायुसेना स्टेशन, उतरलाई (बाड़मेर) में पिचोरा स्क्वाड्रन की तैनात नफरी में शामिल थे। बाड़मेर जिले में लगातार बरसात हुई और बाढ़ आ गई। 23 अगस्त, 2006 को सार्जेंट शुक्ला यूनिट के अन्य वायु योद्धाओं के साथ इस स्टेशन पर कार्यरत कुछ सिविलियनों के परिवारों की सहायता करने के लिए निकटवर्ती गावों में गए।

लौटते समय कुछ ग्रामीणों ने पेड़ों के शिखर पर बैठे तथा बाढ़ में जीवन के लिए संघर्ष कर रहे चार व्यक्तियों को बचाने के लिए वायु योद्धाओं से अनुरोध किया। बाढ़ के अशांत पानी के खतरनाक ऊंचे स्तर से व्यक्तियों को बचाने का कार्य अत्यधिक चुनौतीपूर्ण तथा स्पष्ट रूप से जोखिमपूर्ण था। बाढ़ के वेगपूर्ण जलप्रवाह में प्रवेश करने की जब दल के अन्य सदस्यों की हिम्मत नहीं हुई तो एक सैनिक की सच्ची परम्परा के अनुरूप सार्जेंट शुक्ला स्वेच्छा से इन व्यक्तियों को बचाने के लिए तैयार हो गया। असहाय व्यक्तियों, जो बह जाने के खतरे में थे, को बचाने के एक एकनिष्ठ उद्देश्य से वेव बाढ़ के 20 फुट गहरे पानी की प्रबल धारा में तैरने लगे। तथापि, लगभग 100 मीटर तक तैरने के बाद वे पानी के भंवर में फंस गए तथा अपने आप को निकाल नहीं सके। उनका शव दो दिन बाद बरामद किया गया था।

सार्जेंट जय प्रकाश शुक्ला ने चरम परिस्थितियों में अद्वितीय साहस और वीरता का प्रदर्शन किया तथा साथी नागरिकों का बचाने का प्रयास करते समय सर्वोच्च बलिदान दिया।

15481089 सवार सुलतान सिंह
कवचित कोर/24 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 अगस्त 2006)

30 अगस्त, 2006 को श्रीनगर में एक पुल को पार करने की आतंकवादियों की संभावना के बारे में सूचना मिली थी। सवार सुलतान सिंह पुल के निकट प्रतीक्षा कर रहे घात दल में शामिल थे। आतंकवादी उनके स्थान के बहुत निकट पुल के पास पीछे से पहुंचे। उन्होंने आतंकवादियो के केवल दो मीटर दूर रह जाने तक गोलीबारी न करके अपनी आयु और सेवा से बढ़कर रणनीतिक कुशाग्रता का प्रदर्शन किया। शुरू हुई सघन गोलीबारी में सवार सुलतान सिंह ने लगभग आमने-सामने की लड़ाई में एक आतंकवादी को मार गिराया जबकि स्वयं को भी गोलियों के अनेक घाव लगे। अत्यधिक रक्तस्राव के बावजूद तथा अपने दर्द तथा घावों की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए उन्होंने दूसरे आतंकवादी की गोलियों की बौछार का सामना किया जोकि मारे गए आतंकवादी के कुछ मीटर पीछे था। असाधारण बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए सवार सुलतान सिंह दूसरे आतंकवादी से भिड़ गए जो भौंचक्का रह गया तथा वह घात दल के अन्य सदस्यों को नुकसान पहुंचा पाता उससे पहले उसे मार गिराया। बाद में, सवार सुलतान सिंह अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

सवार सुलतान सिंह ने अदम्य साहस तथा असाधारण वीरता का प्रदर्शन किया तथा राष्ट्र के लिए आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए बलिदान दिया।

एसएस-40823 कैप्टन सुनील यादव
सिग्नल को/26 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 सितम्बर 2006)

18 सितम्बर, 2006 को डोडा (जम्मू-कश्मीर) जिले के एक गांव के मकई के एक खेत में आतंकवादियों के छिपने के ठिकाने का पता लगाने तथा उसे नष्ट करने के लिए कैप्टन सुनील यादव के अधीन एक संक्रियात्मक सैन्य टुकड़ी ने अभियान शुरू किया था।

कैप्टन सुनील यादव चुपचाप निकट आए तथा पार्टियों को मकई के खेत में छिपा दिया जो लगभग सोलह घंटे तक छिपी रहीं। निकटवर्ती मकई के खेत में आतंकवादियों के उपस्थित होने की पुष्टि होने पर एक पार्टी को सामने आने के लिए कहा गया। अपने आपको घिरा हुआ पाने पर आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी तथा मकई के खेत से भाग गए। कैप्टन सुनील यादव ने अनुकरणीय पहलशक्ति का प्रदर्शन करते हुए अपनी स्थिति को पुनर्व्यवस्थित किया, एक चट्टान के पीछे आड़ ली तथा एके-47 से गोलियों की भारी बौछार करके दो आतंकवादियों को मार गिराया। तीसरा आतंकवादी मकई के खेत में भाग गया। कैप्टन सुनील यादव ने व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना मकई के खेत में आतंकवादी का पीछा किया तथा अकेले ही उसको मार गिराया।

कैप्टन सुनील यादव ने आतंवादियों के विरुद्ध लड़ाई में भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्परा के अनुरूप उत्कृष्ट बहादुरी, अदम्य साहस तथा असाधारण कोटि की व्यक्तिगत वीरता का प्रदर्शन किया।

एसएस-41969 लेफ्टिनेंट कृष्ण दयाल सिंह राठौर
तोपखाना रेजिमेंट/42 फील्ड रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 सितम्बर 2006)

लेफ्टिनेंट कृष्ण दयाल सिंह राठौर ने जिला तिनसुकिया, असम के एक गांव में अपने स्रोतों द्वारा पुष्ट आसूचना के आधार पर 24 सितम्बर 2006 को एक घेराबंदी तथा खोज ऑपरेशन शुरू किया।

घेराबंदी रात को की गई थी और उसे सवेरे पुन: व्यवस्थित किया गया था। लेफ्टिनेंट राठौर के नेतृत्व में एक पार्टी ने घर-घर की तलाशी शुरू की। 1400 बजे जब पार्टी एक संदिग्ध घर में पहुंची तो उस पर गोलीबारी की गई तथा घर के अंदर से एक हथगोला फेंका गया। एक आतंकवादी का सही पता लगने पर लेफ्टिनेंट राठौर ने उसको गोली से तुरंत उड़ा दिया। उस समय हथगोला उनके नजदीक फटा तथा उनको छर्रों के अनेक घाव लगे। दूसरे आतंकवादी ने घर के अंदर से हमारी टीम पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। स्वयं की सुरक्षा की परवाह किए बिना, एक अन्य रैंक द्वारा मुहैया कराई गई गोलीबारी की आड़ लेकर, यह अफसर अपने साथी के साथ घर के अंदर प्रविष्ट हुआ तथा दूसरे आतंकवादी, जिसने उनकी ओर दूसरा हथगोला फेंका था, के निकट जाकर उसे गोलीबारी करके घायल कर दिया। इस प्रकार घायल होने तथा अत्यधिक रक्तस्राव के बावजूद इस अफसर ने एक दुर्दांत आतंकवादी को घेरकर मार डाला तथा एक अन्य आतंकवादी को घायल कर दिया जिसके फलस्वरूप बड़ी

मात्रा में हथियारों, गोलाबारूद, विस्फोटकों तथा भारी मात्रा में नकदी बरामद की गई।

लेफ्टिनेंट कृष्ण दयाल सिंह राठौर ने आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ाई में जीवन के प्रति गंभीर खतरे के बावजूद असाधारण वीरता तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया।

4281832 सिपाही राहुल
4 बिहार रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 07 अक्तूबर 2006)

07 अक्तूबर, 2006 को मध्यरात्रि में जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले के क्षेत्र में घातक प्लाटून की एक घुसपैठीय दल से मुठभेड़ हो गई जिसके परिणामस्वरूप एक आतंकवादी मारा गया तथा इसके बाद रात भर भिडंत जारी रही। सैनिकों की तैनाती की पुनर्व्यवस्था करते समय 8 अक्तूबर को सवेरे सिपाही राहूल के कट ऑफ ग्रुप ने जंगल में उनके ऊपर 10-15 मीटर की ऊंचाई पर एक आतंकवादी को मोर्चा संभालते हुए देखा। सम्पूर्ण पार्टी के लिए उत्पन्न हुए खतरे का भांपते हुए अपने साथी के साथ सिपाही राहूल ने आतंकवादी के और निकट पहुंचने का निर्णय लिया। तथापि, खुले में और नीचे होने के कारण, आतंकवादी को उनकी आवाजाही का पता लग गया तथा एके-47 से उन पर गोलीबारी कर दी। सिपाही राहूल की छाती में गोलियों की बौछार लगी तथा वे गंभीर रूप से घायल हो गए। तथापि, घावों की परवाह किए बिना उन्होंने अद्वितीय साहस का प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़ना जारी रखा तथा अंत में समस्त सैनिकों पर कहर बरपा रहे आतंकवादी को मार गिराया। इस कार्रवाई के दौरान, सिपाही राहूल अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

सिपाही राहूल ने अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुकरणीय तथा अदम्य साहस और असाधारण बहादुरी का परिचय दिया तथा भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुरूप सर्वोच्च बलिदान दिया।

15326453 सैपर शिंदे रामचन्द्र शिवाजी
इंजीनियर कोर/44 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 अक्तूबर 2006)

विशेष सूचना प्राप्त होने पर जम्मू-कश्मीर के जिला पुलवामा के एक क्षेत्र की घेराबंदी की गई थी जिसमें लक्षित घर के ठीक सामने स्थित एक स्कूल भी शामिल था जिसको घेरना अपरिहार्य हो गया था। सैपर शिंदे रामचन्द्र शिवाजी वाले दल ने निर्दोष लोगों के जीवन के प्रति आसन्न खतरे को भांपते हुए फंसे हुए लगभग 1400 स्कूली बच्चों को शीघ्रता से सुरक्षित स्थान पर ले जाना सुनिश्चित किया। सैपर शिंदे ने स्वेच्छा से यह कार्य करना चाहा। बच्चों के अंतिम समूह को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाते समय, बच निकलने की फिराक में आतंकवादियों ने उस पर गोलीबारी कर दी। स्थिति की नज़ाकत का मूल्यांकन करते हुए उन्होंने गोलीबारी का जवाब देने में संयम बरता तथा एकत्र हुए बच्चों के साथ तुरंत खतरे वाले क्षेत्र से बाहर कूद गए। इस कार्य के दौरान वे घायल हो गए।

घावों के बावजूद उन्होंने सुरक्षित स्थान पर जाने से इंकार कर दिया तथा आतंकवादियों का पता लगाने में, जो एक दूसरे घर में घुस गए थे, एक टर्नकी के रूप में कार्य किया। 1830 बजे आतंकवादियों ने घेराबंदी को तोड़ने के लिए भारी गोलीबारी की। उन्होंने अडिग रहते हुए कारगर गोलीबारी करके आतंकवादियों की वहीं दुबके रहने पर विवश कर दिया। इस प्रकार हुई गोलीबारी की लड़ाई में वे निर्भयता और बहादुरी से आगे बढ़े, उन्हें व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह नहीं थी तथा उन्होंने अचूक गोलीबारी से एक विदेशी सहित दोनों आतंकवादियों को मार गिराया। वे गंभीर रूप से घायल हो गए थे तथा बाद में सेना की उपयुक्त परम्परा के अनुरूप शहीद हो गए। उनके साहस, वीरता तथा मानवता के प्रति अत्यधिक सहानुभूमि के कारण सैकड़ों निर्दोष लोगों की जान बच सकी तथा आतंकवादियों का सफाया सुनिश्चित हो सका।

सैपर शिंदे रामचन्द्र शिवाजी ने अनुकरणीय साहस, मानव-भलाई के प्रति अत्यधिक समर्पण तथा उच्च कोटि की असाधारण वीरता का प्रदर्शन किया तथा आतंकवदियों के विरुद्ध लड़ाई में सर्वोच्च बलिदान दिया।

जेसी-439107 सूबेदार मनोहर पी
10 मद्रास रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 अक्तूबर 2006)

18 अक्तूबर, 2006 को 0700 बजे जिला कुपवाड़ा (जम्मू-कश्मीर) के एक जंगल में किसी स्थान पर निगरानी सैनिक टुकड़ी ने संदिग्ध गतिविधि को देखा। सघन तलाशी अभियान शुरू किया गया। सूबेदार मनोहर पी के नेतृत्व में तलाशी पार्टी ने पांच आतंकवादियों का पता लगाया। महत्व और व्यावसायिक कुशाग्रता का परिचय देते हुए ये जेसीओ आतंकवादियों के निकट आए तथा उनको दबोच लिया। गोलीबारी की इस लड़ाई में तीन आतंकवादियों का सफाया हुआ। तथापि, गोली लगने से घायल इनका साथी आतंकवादियों की गोलीबारी की चपेट में आ गया। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना सूबेदार मनोहर पी रेंगकर घटनास्थल पर पहुंचे तथा अपने साथी को मुठभेड़ स्थल से बाहर निकाला तथा सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने में मदद की।

सूबेदार मनोहर पी ने अपनी पार्टी को पुनः व्यवस्थित किया, पत्थरों के पीछे छिप गए आतंकवादियों का पीछा किया, चुपके से उनके छिपने के स्थान तक पहुंचे तथा हथगोले फैंककर और व्यक्तिगत हथियार से गोली चलाकर एक आतंकवादी का सफाया कर दिया। घनी झाड़ियों तथा अंधेरे का फायदा उठाकर एक अन्य आतंकवादी जंगल में भाग गया। सूबेदार मनाहेर पी ने सघन खोज जारी रखी तथा 20 अक्तूबर 2006 को आतंकवादी का पता लगाया तथा अपनी पार्टी को शीघ्रता से पुनः व्यवस्थित किया। आतंकवादी की सीधी गोलीबारी की बौछार में होने के कारण सूबेदार मनोहर पी ने अपनी स्थिति पुनः संभाली तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए निकट से आतंकवादी का सफाया कर दिया।

सूबेदार मनोहर पी ने आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ाई में अद्भुत बहादुरी, बेहतरीन नेतृत्व तथा अपनी सुरक्षा में डालकर निःस्वार्थ कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

2693628 लांस नायक ज्योतिष प्रकाश
ग्रेनेडियर्स/39 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 अक्तूबर 2006)

26 अक्तूबर, 2006 से 29 अक्तूबर, 2006 के दौरान पुंछ जिला (जम्मू-कश्मीर) के एक गांव में चलाए गए एक ऑपरेशन हेतु लांस नायक ज्योतिष प्रकाश कंपनी कमांडर क्लोज ग्रुप में शामिल थे।

तलाशी के दौरान लांस नायक ज्योतिष प्रकाश ने दो आतंकवादियों का पता लगाया जो भाग कर नाले में पत्थरों के पीछे छिप गए थे। वे तुरंत ही आतंकवादियों के निकट पहुँचे तथा भाग रहे एक आतंकवादी को मार गिराया। घनी झाड़ियों तथा पत्थरों में छिपे शेष आतंकवादियों का पता लगाने तथा उनका सफाया करने के लिए एक तलाशी अभियान शुरू किया गया था। तलाशी के दौरान लांस नायक ज्योतिष प्रकाश ने तलाशी पार्टी से मुश्किल से दो से तीन मीटर की दूरी पर एक आतंकवादी का पता लगाया। अपने साथियों के प्रति आसन्न खतरे को भांपते हुए, व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह किए बिना, लांस नायक ज्योतिष प्रकाश अंधाधुंध गोलीबारी के बावजूद उस पर टूट पड़े तथा बिल्कुल नजदीक से उसका सफाया कर दिया परन्तु बाद में वे घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

लांस नायक ज्योतिष प्रकाश ने आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ाई में अदम्य साहस, असाधारण बहादुरी तथा अपने साथियों को बचाने के लिए अपनी सुरक्षा की कतई भी परवाह न करने का परिचय दिया तथा भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप अपने जीवन का बलिदान दिया।

15325573 सैपर बाबूराम वीरण्णा पट्टार
5 इंजीनियर रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 04 नवम्बर 2006)

सैपर बाबूराम वीरण्णा पट्टार आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के पेडाना गांव के निकट तैनात बाढ़ राहत/बचाव दल में शामिल थे। 04 नवम्बर 2006 को लगभग 1500 बजे वह 5 इंजीनियर रेजिमेंट के तीन सैन्य कार्मिकों तथा अन्य आठ सिविलियनों के साथ, बाढ़ ऑपरेशन के भाग के रूप में, बोट असाल्ट यूनिवर्सल टाइप 1ए (बीएयूटी) में बाढ़ के जल से घिरे एक गांव की ओर जा रहे थे। रास्ते में नावे की आउट बोर्ड मोटर (ओबीएम) पानी के अंदर लगे मछुआरे के जाल में उलझ गई तथा ओबीएम रुक गई।

पानी के तेज प्रवाह के कारण नाव एक नाले में बह गई तथा पुल के कंक्रीट से टकरा गई। बचाव दल द्वारा न डरने की बार-बार चेतावनी दिए जाने के बावजूद सिविलियन डर गए तथा नाव को रोक दिया जिसके फलस्वरूप नाव पलट गई। सिविलियन बाढ़ के पानी में गिर गए। इस स्थिति में बाबूराम वीरण्णा पट्टार ने, व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना एक हाथ से तैरते हुए तथा साथ-साथ दूसरे हाथ से सिविलियन महिला को उठाकर उसकी सहायता की। फिर अपने सिर में चोट लगने तथा पानी के तेज प्रवाह में समुद्री अपतृण और पुल के टी बीमों से टकराने से पहले उन्होंने बाढ़ के पानी में डूब रहे एक विधायक सहित दो और व्यक्तियों की जानें बचाई तथा अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। बाद में 09 नवम्बर 2006 को उनके पार्थिव शरीर को पुल-स्थल से बरामद किया गया।

इस प्रकार, सैपर बाबूराम वीरण्णा पट्टार ने साधारण किस्म से परे कर्त्तव्यपरायणता का निष्पादन करते समय उच्च दर्जे की वीरता तथा असाधारण साहस का प्रदर्शन किया तथा सिविलियनों को बचाने के प्रयास में सर्वोच्च बलिदान दिया।

14912497 कंपनी हवलदार मेजर रमेश चन्द्रा पान्डे
मैकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री/26 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 08 नवम्बर 2006)

डोडा जिला (जम्मू-कश्मीर) के एक गांव के एक घर में आतंकवादियों के छिपने के ठिकाने को नष्ट करने हेतु कंपनी हवलदार मेजर रमेश चन्द्रा पान्डे में 08 नवम्बर 2006 को ऑपरेशनल कॉलम शुरू किया गया था। आतंकवादियों की उपस्थिति की पुष्टि होने पर वे तुरंत मानसिक रूप से तैयार हुए तथा लक्षित घर को 1430 बजे घेर लिया। उन्होंने सिविलियनों को सुरक्षित क्षेत्रों में पहुंचाया तथा आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। अपने आप को घिरे हुए पाकर आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी तथा हमारे कॉलम पर हथगोले फेंके। कंपनी हवलदार मेजर पान्डे की दाईं जांघ पर छर्रों के घाव लगे परन्तु उन्होंने सुरक्षित स्थान पर ले जाए जाने से इंकार कर दिया तथा और आगे बढ़ गए। व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह किए बिना, ये गोलीबारी के बीच अपने साथी के साथ रेंगकर आगे बढ़े, हथगोले फेंके तथा गोलियों की बौछार करके एक आतंकवादी को बिल्कुल नजदीक से मार गिराया। एक अन्य आतंकवादी बच निकलने की फिराक में गोलीबारी करते हुए बाहर आया तथा वह दरवाजे पर आड़ दे रहे कंपनी हवलदार मेजर पान्डे द्वारा मौके पर ही मारा गया।

कंपनी हवलदार मेजर रमेश चन्द्रा पान्डे ने आतंकवादियों के विरुद्ध में असाधारण बहादुरी, अदम्य साहस तथा उच्च कोटि की व्यक्तिगत वीरता का प्रदर्शन किया।

आईसी-59741 मेजर अमन ओबेरोय
कवचित कोर/22 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 दिसम्बर 2006)

मेजर अमन ओबेरोय राष्ट्रीय राइफल बटालियन की कंपनी के कमान अफसर थे। 23 दिसम्बर 2006 को इस अफसर ने सोपुर जिला (जिला-कश्मीर) के एक गांव में दो आतंकवादियों के उपस्थित होने के बारे में बड़ी मेहनत से अचूक आसूचना प्राप्त की। इस अफसर ने बटालियन मुख्यालय को सूचना दी तथा ये स्वयं त्वरित कार्रवाई दल के साथ शीघ्रता से आगे बढ़े तथा लक्षित घरों को घेर लिया जिससे सब हतप्रभ रह गए। घेरे को सुदृढ़ करके और अधिक कसा गया।

1730 बजे जब तलाशी ली जा रही थी आतंकवादियों ने पक्के घरों से सैनिकों पर भारी गोलीबारी की। चूंकि सूर्य अस्त होने को जा रहा था, मेजर ओबेरोय लक्षित घर की खिड़की के पास रेंगकर गए तो उनके हेलमेट पर आतंकवादियों की गोलियां लगीं। व्यक्तिगत जीवन की बिल्कुल भी परवाह किए बिना, यह अफसर आतंकवादियों की गोलीबारी का सामना करते हुए, रेंगकर एक से दूसरे कमरे में गए, कमरे के अंदर हथगोला फैंका तथा कारगर कक्ष अंतरारोधन तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए इन्होंने कमरे में प्रवेश किया तथा बिल्कुल नजदीक से एक संगठन के दो आतंकवादियों को मार गिराया। आतंकवादियों से बड़ी संख्या में हथियार तथा गोलाबारूद बरामद किए गए।

मेजर अमन ओबेरोय ने आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ाई में अचूक आसूचना प्रबंधन, अदम्य साहस तथा उत्कृष्ट नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

आईसी-55281 मेजर संजय कुमार तनवर
राजपूत रेजिमेंट/58 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 02 जनवरी 2007)

02 जनवरी, 2007 को मेजर संजय कुमार तनवर ने जिला उधमपुर (जम्मू-कश्मीर) के जनरल एरिया में घेराबंदी तथा तलाशी ऑपरेशन का नेतृत्व किया। खड़ी चट्टानों पर चढ़ने के लिए फिसलन रस्सों का इस्तेमाल करके सबको हतप्रभ करते हुए 04 जनवरी 2007 को 04.00 बजे लक्षित ढोक को घेरा गया। 06.45 बजे एक आतंकवादी अपने सैनिकों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए बाहर आया। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना इस अफसर ने भागते हुए आतंकवादी का पीछा किया तथा उसे गोली मार दी।

फिर उन्होंने अन्य आतंकवादियों की ओर से हो रही भारी गोलीबारी को निष्प्रभावी करने के लिए लक्षित ढोक पर गोलीबारी करने हेतु रॉकेट लांचर को निर्देश दिया। तदुपरांत, गोलीबारी करते हुए बाहर आए दो आतंकवादियों को गोली मार दी गई। चूंकि घर के अंदर घुसे चौथे आतंकवादी की ओर से अभी भी गोलीबारी की जा रही थी इसलिए अफसर बगल की दीवार को उड़ाने के लिए विस्फोटक लगाने हेतु रेंगकर आगे बढ़े तथा उसे बाहर आने पर मजबूर कर दिया। एक बार फिर, गोलीबारी के समक्ष होने के बावजूद, अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए दीवार में किए गए छेद के पास रेंगकर आए तथा आतंकवादी पर गोलीबारी करके उसे मार गिराया।

मेजर संजय कुमार तनवर ने शत्रु की गोलीबारी के समक्ष व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना असाधारण वीरता तथा उच्च कोटि के नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

आईसी-55096 मेजर प्रतुल गौरंग मेहता
तोपखाना रेजिमेंट/172 फील्ड रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 02 अप्रैल 2007)

पूर्वी क्षेत्र में प्रतिविद्रोही कार्रवाई के लिए तैनात, कंपनी ऑपरेटिंग बेस के कंपनी कमांडर मेजर प्रतुल गौरंग मेहता ने निम्नलिखित दो तलाशी अभियान चलाए :--

09 जनवरी 2007 को स्थानीय गांव के एक घर में भारी मात्रा में हथियारबंद तीन आतंकवादियों के मौजूद होने की सूचना मिलने पर, मेजर प्रतुल मेहता, अपने त्वरित कार्रवाई दल के साथ उस स्थान पर पहुंचे और घर पर घेरा डाला। उन्होंने अपने दल को गोलीबारी से आड़ उपलब्ध कराने का कार्य सौंपा और अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए घर पर धावा बोला और मुठभेड़ में आतंकवादी को दबोच लिया। शेष दो आतंकवादियों को भी उनके पीछे आए अन्य दो जवानों ने दबोच लिया। इस ऑपरेशन से तीन दुर्दांत आतंकवादी पकड़े गए और दो एके-56 हल्की मशीन गन, एक पिस्तौल और दो ग्रेनेड बरामद किए गए।

02 अप्रैल 2007 को जब मेजर प्रतुल मेहता अपने दल के साथ गश्त लगा रहे थे तब उन्हें किसी दूसरे गांव में भारी मात्रा में हथियारबंद चार आतंकवादियों के मौजूद होने का पता चला। वे तुरंत उस स्थान पर पहुंचे और घर पर घेरा डाला। ललकारे जाने पर आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप दोनों तरफ से भारी गोलीबारी शुरू हो गई। जब गोलीबारी कम हो गई तो मेजर मेहता अपने दो साथियों के साथ शीघ्र घर के अन्दर प्रविष्ट हुए और आतंकवादियों को मार गिराया। अन्य दो घायल आतंकवादियों को दल के अन्य सदस्यों ने मार गिराया। इस संक्रिया में चार दुर्दांत आतंकवादी मारे गए और दो एके-47 राइफलें बरामद हुईं।

मेजर प्रतुल गौरंग मेहता ने व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए ओजस्वी नेतृत्व, उच्चकोटि की वीरता का प्रदर्शन किया।

आईसी-54541 मेजर परमवीर सिंह जमवाल
मैकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री/9 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 जनवरी 2007)

यूनिट स्रोतों से प्राप्त सूचना के आधार पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के साथ राष्ट्रीय राइफल बटालियन विशेष संक्रिया दल, कुलगाम, इन्फैन्ट्री बटालियन (प्रादेशिक सेना) के संयुक्त दलों ने 17 जनवरी 2007 को अनन्तनाग जिले के गांव को घेराबंदी की और तलाशी कार्य शुरू किया।

जब तलाशी का कार्य प्रगति पर था, घर में छिपे आतंकवादियों ने छोटे शस्त्रों से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और दलों पर हथगोले फेंके। अपने दलों पर आए खतरे को भांपते हुए, मेजर परमवीर सिंह जमवाल आतंकवदियों की कारगर गोलीबारी के बावजूद खतरनाक स्थिति के बीच रेंगते हुए पहुंचे, मल्टी ग्रेनेड लांचर से अचूक गोलीबारी की तथा आगे बढ़कर हथगोले फेंके और साथ-साथ अपनी राइफल से गोलियों की बौछार करके दो आतंकवादी का सफाया कर दिया। फिर भी, अफसर ने खिड़की में संदिग्ध हलचल देखी जहां से आतंकवादी ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू की। अफसर ने अत्यधिक सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको खतरे में डालकर तिरछे रेंगकर आश्चर्य चकित करते हुए नजदीकी लड़ाई में तीसरे आतंकवादी का सफाया कर दिया।

मेजर परमवीर सिंह जमवाल ने अपने दल के सैनिकों के जीवन बचाते हुए और प्रतिबंधित घोषित गुट के तीन दुर्दांत आतंकवादियों का सफाया करते हुए भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया।

9106682 राइफलमैन रैयास अहमद गनाई
जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री/50 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13 फरवरी 2007)

निगरानी दल से प्राप्त सूचना के आधार पर 13 फरवरी 2007 को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले के एक गांव में राष्ट्रीय राइफल बटालियनल ने घेराबंदी की और तलाशी अभियान चलाया।

18.15 बजे लौटते समय गांव के निकट संदिग्ध गतिविधियां देखी गई। नेतृत्व कर रहे स्काउट राइफल गनाई ने दो आतंकवादियों को ललकारा। सैन्य दल शीघ्र ही आतंकवादियों की तीव्र और कारगर गोलीबारी के दबाव में आ गया। उच्च स्तर का युद्ध कौशल दिखाते हुए इन्होंने आड़ ली, जवाबी गोलीबारी में एक आतंकवादी को घायल कर दिया। सघन गोलीबारी शुरू हो गई। अपने सहकर्मियों पर गंभीर खतरे को भांपते हुए,

ये निकट के नाले के भीतर से रेंगते हुए चुपचाप नाले के मुहाने पर तैनात हो गए। पल भर के लिए अपने आपको खतरे में डालकर असाधारण साहस का परिचय देते हुए इन्होंने तत्काल घायल आतंकवादी पर गोली चलाई और उसे मार गिराया। निडर होकर ये बार-बार खतरे का सामना करते रहे। अंत में उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन करते हुए दूसरे आतंकवादी पर गोली चलाई और एकदम नजदीक आकर उसे मार गिराया।

राइफलमैन रैयास अहमद गनाई ने आतंकवादियों से लड़ते हुए अदम्य साहस, साहचर्य और पेशेवर कौशल का प्रदर्शन किया।

4195647 लांस नायक भवान सिंह (मरणोपरांत)
2 पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 मार्च, 2007)

20 मार्च, 2007 को विशेष सूचना मिलने पर पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल) की बटालियन की सबसे अग्रणी सैन्य टुकड़ी कुपवाड़ा जिले (जम्मू-कश्मीर) के एक गांव के लिए रवाना हुई और लगभग 03.20 बजे संदिग्ध घर पर घेराबंदी की। लांस नायक भवान सिंह उस दल के सदस्य थे।

03.50 बजे प्रतिकूल मौसम और घुप अंधेरे का फायदा उठाते हुए चार आतंकवादियों ने घेरे को तोड़ने की कोशिश की और लांस नायक भवान सिंह और दल कमांडर की ओर गोलीबारी करते हुए दौड़े। संख्या में अधिक होने के बावजूद दोनों अपनी जगह पर डटे रहे और आतंकवादियों को उलझाए रखा। दल कमांडर ने दो आतंकवादियों को मार गिराया लेकिन अनेक गोलियां लगने के कारण गिर गए। यह देखते हुए लांस नायक भवान सिंह व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह ने करते हुए आड़ से बाहर आए और भारी गोलीबारी करते हुए दल कमांडर को बचाने के लिए दौड़े। दल कमांडर को गोलीबारी क्षेत्र से निकालने की कोशिश में उनको गोली आ लगी और उन्हें गहरी चोट लगी। तथापि, उन्होंने दल कमांडर को घसीटना जारी रखा और अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त होने से पहले वे दल कमांडर को गोलीबारी से बाहर निकालने में सफल रहे।

लांस नायक भवान सिंह ने ट्रूप कमांडर को बचाने के प्रयास में अनुकरणीय साहस और भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं को बनाए रखते हुए साहचर्य की भावना का प्रदर्शन किया।

आईसी-62560 कैप्टन कौशल कश्यप
21 पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 मार्च, 2007)

अरुणाचल प्रदेश में तैनात 21 पैरा (विशेष बल) के 'घ' आक्रमण दल के ट्रूप लीडर कैप्टन कौशल कश्यप बहुत कम समय में प्रभावी गुप्त आसूचना नेटवर्क की स्थापना में सहायक थे। असम के निवासी होने के नाते उन्होंने मनुबाम आरक्षित वन में आतंकवादियों की गतिविधि के बारे में विश्वसनीय खबर प्राप्त करने के लिए स्थानीय लोगों के साथ सफलतापूर्वक घुलने-मिलने के लिए भाषा के व्यवहार और सांस्कृतिक कौशल का इस्तेमाल किया।

27 मार्च, 2007 को कैप्टन कश्यप को अपनी इकट्ठी की गई आसूचना से मनुबाम वन में तोड़फोड़ की गतिविधियों संबंधी योजना बनाने और अंतिम रूप देने के लिए वरिष्ठ आतंकवादी नेतृत्व की बैठक के बारे में महत्वपूर्ण सूचना मिली। कैप्टन कश्यप ने तेजी से आतंवादियों के नापाक इरादे को नष्ट करने के लिए सतर्क योजना बनाई। अनजान राज्य में अपरिचित ऊबड़-खाबड़ भू-भाग में दो दिन चलने के बाद कैप्टन कश्यप और उनके दल ने 29 मार्च 2007 को कंचांगे हका नाले पर गुप्त रूप से निगरानी की व्यवस्था की। 30 मार्च 2007 को लगभग 06.00 बजे इन्होंने तीन आतंकवादियों को आते हुए देखा। सेना द्वारा ललकारे जाने पर आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी की। कैप्टन कश्यप ने अपने दल के साथ अचूक गोलीबीरी से उन पर प्रत्याक्रमण किया और इस गोलीबारी में बिल्कुल निकट लड़ाई में दो आतंकवादियों का मार गिराया। ये आतंकवादी जनवरी 2007 में उत्तर असम में बिहारी मजदूरों को मारने में भी सहायक थे।

कैप्टन कौशल कश्यप ने दो शीर्ष आतंकवादियों को नजदीकी लड़ाई में मारने में कर्त्तव्य के प्रति निस्वार्थ समर्पण, सूचना एकत्रित करने में कठिन प्रयत्न, अनुकरणीय नेतृत्व, उत्कृष्ट वीरता और सूझबूझ का प्रर्दशन किया।

आईसी-57912 मेजर स्वपनीश परिहार
तोपखाना रेजिमेंट/174 फील्ड रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 मार्च, 2007)

31 मार्च, 2007 को असम के शिवसागर जिले के एक गांव में चार आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना के आधार पर मेजर स्वपनीश परिहार अपने त्वरित कार्रवाई दल के साथ शीघ्र ही उस स्थान पर पहुंचे।

इस अफसर ने उपलब्ध नफरी के साथ शीघ्र घेराबंदी की और साथ-साथ तलाशी अभियान शुरू कर दिया। मेजर स्वपनीश परिहार लक्षित घर के पास पहुंचे और अन्य नागरिकों को किसी प्रकार का नुकसान न हो, इससे बचने के लिए तलाशी दल का स्वयं नेतृत्व किया। प्रवेश करते ही आतंकवादियों में से एक ने काफी निकट से अफसर पर गोली चलाई जिससे ये गंभीर रूप से घायल हो गा और उनके हथियार नीचे गिर गए। गंभीर चोट में भी निडर रहते हुए और असाधारण आक्रामकता और साहस के साथ मेजर स्वपनीश परिहार ने आतंकवादी को दबोचा, उसके हाथ से हथियार छीन लिया और उसे मार डाला।

यद्यपि पांच गोलियों से गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद इन्होंने वहां से हटने से इंकार किया और अतिरिक्त सैन्य बल के आने तक घेरे को बनाए रखने के लिए अपने दल को निर्देश देना जारी रखा। तलाशी अभियानों से एक और दुर्दांत आतंकवादी का सफाया हो गया और एक एके-56 राइफल और भारी मात्रा में गोलाबारूद और विस्फोटक बरामद हुए।

मेजर स्वपनीश परिहार ने आतंकवादियों के विरुद्ध संक्रिया में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए उत्कृष्ट वीरता और अतुल्य साहस का प्रदर्शन किया।

12944610 लांस नायक रविन्द्र सिंह मलिक
159 इन्फैन्ट्री बटालियन (टीए) (एच & एच) डोगरा (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 01 अप्रैल 2007)

लांस नायक रविन्द्र सिंह मलिक 01 अप्रैल, 2007 को डोडा जिले (जम्मू-कश्मीर) के सामान्य क्षेत्र में छिपे दो आतंकवादियों के बारे में पक्की आसूचना प्राप्त करने में सहायक थे। सूचना के आधार पर सैन्य टुकड़िया तैयार की गईं। तलाशी कार्य का नेतृत्व कर रही सैन्य टुकड़ी के सदस्य लांस नायक रविन्द्र सिंह मलिक ने पूरी तरह से छद्म रूप से छिपने के स्थान का पता लगाया, अचानक उन पर गोली चलाई गई परंतु व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए वे आगे बढ़े, गोली चलाई और दो आतंकवदियों को घायल कर दिया। इस गोलीबारी में, उन्हें आतंकवादी की गोली छाती के पिछले बाएं भाग में आ लगी जिससे वे घायल हो गए। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वे होशियारी से आतंकवादियों के निकट बढ़ते रहे और दो आतंकवादियों को मार गिराया। बाद में घावों के कारण वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

लांस नायक रविन्द्र सिंह मलिक ने गंभीर प्रतिकूल स्थितियों में अनुकरणीय साहस, अडिग धैर्य और उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया और आतंकवादियों से लड़ते हुए भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप सर्वोच्च बलिदान दिया।

2797930 लांस नायक बच्चाव शशिकांत गणपत
2 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 जुलाई 2007)

30 जुलाई, 2007 को जम्मू-कश्मीर के उड़ि क्षेत्र में नियंत्रण रेखा के उस पार से संभावित घुसपैठ की सूचना के आधार पर कमान अफसर का त्वरित कार्रवाई दल घुसपैठ स्थान के लिए रवाना हुआ जिसमें लांस नायक बच्चाव शशिकांत गणपत शामिल थे। सैन्य दलों की साहसिकता और तत्काल कार्रवाई से चकित होकर भयभीत आतंकवादियों ने 31 जुलाई, 2007 को अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और नियंत्रण रेखा के उस ओर भागने की कोशिश करने लगे। आतंकवदियों को नियंत्रण रेखा के उस ओर बच निकलने से आतंकवादियों को रोकने की तात्कालिकता को भांपते हुए लांस नायक बच्चाव शशिकांत गणपत ने निर्भीक साहसिक कार्रवाई से भाग रहे आतंकवादियों को मात कर दिया। दोनों ओर से भारी गोलीबारी के दौरान लांस नायक बच्चाव गोली लगने के कारण घायल हो गए। चोट की परवाह ने करते हुए लांस नायक बच्चाव आगे बढ़े और अति साहसिक निकट मुठभेड़ में एक विदेशी आतंकवादी को मार गिराया और दो को बुरी तरह से घायल कर दिया। इससे भागते आतंकवादी बंजर और जोखिम भरी ऊंचाइयों पर चोटा काज़ीनाग धार पर्वत श्रेणी की चट्टानी गुफा में शरण लेने के लिए मजबूर हो गए। इस अति आसाधारण निष्ठा और वीरतापूर्वक कार्य के दौरान लांस नायक बच्चाव को प्राण घातक चोटें लगीं और बाद में घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

लांस नायक बच्चाव शशिकांत गणपत ने उत्कृष्ट वीरता और कर्त्तव्य से बढ़कर श्रेष्ठ बहादुरी का प्रदर्शन किया जिससे आतंकवादियों के बचकर भाग निकलना संभव नहीं हो पाया और जिसके कारण बाद में आठ विदेशी आतंकवादियों का सफाया किया जा सका।

बरुण मित्रा
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

सं. 165-प्रेज/2007--राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके असाधारण साहसपूर्ण कार्यों के लिए "सेना मेडल/आर्मी मेडल-बार" प्रदान करने का अनुमोदन करती हैं :--

1. एआर-217 डिप्टी कमांडेंट चत्तर सिंह, सेना मेडल, 45 असम राइफल
2. एसएस-39853 कैप्टन विनीत बाजपाई, सेना मेडल, 2/1 गोरखा राइफल

बरुण मित्रा
संयुक्त सचिव

सं. 166-प्रेज/2007--राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके असाधारण साहसपूर्ण कार्यों के लिए "सेना मेडल/आर्मी मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करती हैं :--

1. आईसी-52531 लेफ्टिनेंट कर्नल पंकज साहनी, 4 सिख लाइट इन्फैन्ट्री
2. आईसी-52351 मेजर बृजेन्द्र सिंह भदौरिया, कवचित कोर/4 राष्ट्रीय राइफल
3. आईसी-53297 मेजर सुरेन्द्र सिंह छिल्लर, राजपूत रेजिमेंट/23 राष्ट्रीय राइफल
4. आईसी-56404 मेजर अभिषेक कौशिक, ब्रिगेड ऑफ द गार्ड्स/59 राष्ट्रीय राइफल
5. आईसी-57775 मेजर अवनीश चम्बयाल, 4/1 गोरखा राइफल/15 राष्ट्रीय राइफल
6. आईसी-58912 मेजर संजय कपूर, कवचित कोर/18 असम राइफल
7. आईसी-59503 मेजर रनवीर सिंह धिंगरा, कुमाऊं रेजिमेंट/26 राष्ट्रीय राइफल
8. आईसी-59899 मेजर अमर रुग्गे, मैकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री/21 राष्ट्रीय राइफल
9. आईसी-60311 मेजर समरीध छिब्बर, सेना सेवा कोर/4 राष्ट्रीय राइफल
10. आईसी-60370 मेजर अमित राना, कवचित कोर/3(एनएच) बटालियन असम राइफल
11. आईसी-60428 मेजर उपेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, तोपखाना रेजिमेंट/32 राष्ट्रीय राइफल
12. आईसी-60739 मेजर राजेश कुमार शर्मा, 5 जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री
13. आईसी-61120 मेजर हरमीत सिंह, ग्रेनेडियर्स/39 राष्ट्रीय राइफल
14. आईसी-61351 मेजर आदित्य प्रताप सिंह, तोपखाना रेजिमेंट/29 राष्ट्रीय राइफल

15. आईसी-61995 मेजर प्रशान्त सदाशिव सालियन, सिगनल्स/59 राष्ट्रीय राइफल
16. आईसी-64971 मेजर अभीषेक सिंह, कवचित कोर/5 असम राइफल
17. आईसी-65102 मेजर धीरज मोडगिल, 7 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री
18. एससी-00221 मेजर राजेन्द्र बाबु एम के, तोपखाना रेजिमेंट/316 फील्ड रेजिमेंट
19. आईसी-60527 कैप्टन विजय सिंह मेहता, 19 कुमाऊं रेजिमेंट
20. आईसी-61917 कैप्टन प्रकाश चन्द्र सिर्सवाल, 11 ब्रिगेड ऑफ द गार्ड्स
21. आईसी-62608 कैप्टन अनुराग मोहन, तोपखाना रेजिमेंट/6 राष्ट्रीय राइफल
22. आईसी-62628 कैप्टन अनस अहमद, 19 कुमाऊं रेजिमेंट
23. आईसी-63389 कैप्टन प्रणय पदमाकर पवार, 4 पैराशूट रेजिमेंट (स्पेशल फोर्स)
24. आईसी-63420 कैप्टन प्रभदीप सिंह अटवाल, 6 राजपूत रेजिमेंट
25. आईसी-63471 कैप्टन प्रदीप कुमार थापा, इंजीनियर्स/39 राष्ट्रीय राइफल
26. आईसी-67835 कैप्टन राजीव चौधरी, ईएमई/4 सिख लाइट इन्फैन्ट्री
27. एसएस-39818 कैप्टन अमित भारद्वाज, इंजीनियर्स/22 राष्ट्रीय राइफल
28. एसएस-40266 कैप्टन सन्तोष कुमार राय, सिगनल्स/24 राष्ट्रीय राइफल
29. एसएस-40222 कैप्टन शशी दूबे नरेन्द्रा, सिगनल्स/55 राष्ट्रीय राइफल
30. एसएस-40674 कैप्टन गौरव जोशी, 6 राजपूत रेजिमेंट
31. आईसी-64424 लेफ्टिनेंट सुकिन्दर गुलेरिया, 10 मद्रास रेजिमेंट
32. आईसी-64690 लेफ्टिनेंट अपूर्व वारियर, 3 पैराशूट रेजिमेंट (स्पेशल फोर्स)
33. आईसी-68043 लेफ्टिनेंट अमित कुमार सिंह, 2 बिहार रेजिमेंट
34. एसएस-41345 लेफ्टिनेंट उत्सव सिंह, 2 ग्रेनेडियर्स
35. एसएस-41628 लेफ्टिनेंट जोनाथन ऐलगजैंडर, 4 सिख लाइट इन्फैन्ट्री
36. एसएस-42197 लेफ्टिनेंट मारतन्ड सिंह भदोरिया, 6 राजपूत रेजिमेंट
37. जेसी-258992 सूबेदार प्रेम लाल चन्देल, तोपखाना रेजिमेंट/62 राष्ट्रीय राइफल
38. जेसी-439175 सूबेदार तुलसीधरन पी, मद्रास रेजिमेंट/8 राष्ट्रीय राइफल
39. जेसी-508690 सूबेदार निरमल सिंह, 10 सिख लाइट इन्फैन्ट्री
40. जेसी-508980 सूबेदार बलविन्दर सिंह, 158, इन्फैन्ट्री बटालियन (टीए)(एच एंड एच) सिख लाइट इन्फैन्ट्री
41. जेसी-519644 सूबेदार ओम प्रकाश, 17 डोगरा रेजिमेंट
42. जेसी-539327 सूबेदार राजबीर सिंह, 19 कुमाऊं रेजिमेंट
43. जेसी-539708 सूबेदार प्रेम चन्द, 19 कुमाऊं रेजिमेंट
44. जेसी-634543 सूबेदार यम बहादुर मुखिया, 7/11 गोरखा राइफल
45. जेसी-469713 नायब सूबेदार गिरधारी लाल, 9 राजपूताना राइफल
46. 2682080 हवलदार जगदीश चन्द्र, 2 ग्रेनेडियर्स (मरणोपरांत)
47. 2684875 हवलदार बारीया पर्बत जेठा, ग्रेनेडियर्स/12 राष्ट्रीय राइफल
48. 2884423 हवलदार आनन्द कुमार, राजपूताना राइफल/43 राष्ट्रीय राइफल (मराणोपरांत)
49. 2885874 हवलदार विजय सिंह, राजपूताना राइफल/43 राष्ट्रीय राइफल
50. 2987880 हवलदार सुभाष चन्द्रा, 23 राजपूत रेजिमेंट
51. 3390186 हवलदार गुरमोहन सिंह, 21 सिख रेजिमेंट
52. 3989574 हवलदार कमल नैन, डोगरा रेजिमेंट/62 राष्ट्रीय राइफल
53. 15124549 हवलदार जितेन्द्र कुमार मिश्रा, तोपखाना रेजिमेंट/172 फील्ड रेजिमेंट
54. 2685553 लांस हवलदार बंसी लाल, ग्रेनेडियर्स/29 राष्ट्रीय राइफल
55. 2485321 नायक सुरेन्दर कुमार राना, पंजाब रेजिमेंट/22 राष्ट्रीय राइफल
56. 2991831 नायक मानक सिंह, 23 राजपूत रेजिमेंट
57. 3188007 नायक जयपाल सिंह, 7 जाट रेजिमेंट (मरणोपरांत)
58. 4474644 नायब अवतार सिंह, 11 सिख लाइट इन्फैन्ट्री
59. 5452070 नायक मोहन सिंह गुरुंग, 1/5 गोरखा राइफल (फ्रंटियर फोर्स) (मरणोपरांत)
60. 9420510 नायक रमेश कुमार तामांग, 7/11 गोरखा राइफल
61. 14420909 नायक चन्द्रकेश चौबे, तोपखाना रेजिमेंट/41 राष्ट्रीय राइफल
62. 14424915 नायक बोड्डेडा जगदेश्वर राव, तोपखाना, 138 मीडियम रेजिमेंट
63. 2997882 लांस नायक मलखान सिंह, 23 राजपूत रेजिमेंट
64. 3997184 लांस नायक सेवा देव, डोगरा रेजिमेंट/62 राष्ट्रीय राइफल
65. 4569140 लांस नायक राज कंवल सिंह, महार रेजिमेंट/1 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

66. 9101117 लांस नायक महमूद शाह, 3 जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री

67. 9422289 लांस नायक फुर्बा छिरिंग शेर्पा, 7/11 गोरखा राइफल

68. 15142965 लांस नायक महेन्द्र सिंह यादव, तोपखाना रेजिमेंट/42 फील्ड रेजिमेंट

69. 2607420 सिपाही इत्तमसेट्टी कृष्णा बाबू, मद्रास रेजिमेंट/8 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

70. 2997651 सिपाही दिनेश सिंह, राजपूत रेजिमेंट/58 राष्ट्रीय राइफल

71. 2999366 सिपाही कुशलेन्द्र सिंह, 19 राजपूत रेजिमेंट

72. 4191441 सिपाही ठाकुर सिंह, कुमाऊं रेजिमेंट/26 राष्ट्रीय राइफल

73. 4366787 सिपाही लालरिनावमा, असम रेजिमेंट/59 राष्ट्रीय राइफल

74. 4369136 सिपाही रिंकू फूकन, असम रेजिमेंट/82 पर्वतीय ब्रिगेड कैंप

75. 10213253 सिपाही शैलेश कुमार, 113 इन्फैन्ट्री बटालियन (टीए) राजपूत (मरणोपरांत)

76. 10213393 सिपाही संदीप कुमार पोद्दार, 113 इन्फैन्ट्री बटालियन (टीए) राजपूत (मरणोपरांत)

77. 12944593 मोहम्मद शरीफ, 159 इन्फैन्ट्री बटालियन (टीए) (एच एंड एच) डोगरा/23 राष्ट्रीय राइफल

78. 14927222 सिपाही जबीर खान, मेकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री/9 राष्ट्रीय राइफल

79. 14928435 सिपाही जसविन्दर सिंह, मेकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री/9 राष्ट्रीय राइफल

80. 14933805 सिपाही रविन्द्रा सिंह, मेकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री/50 राष्ट्रीय राइफल

81. 4085407 राइफलमैन हरपाल सिंह नेगी, गढ़वाल राइफल/14 राष्ट्रीय राइफल

82. 4086486 राइफलमैन भगवान सिंह, 5 गढ़वाल राइफल

83. 9104407 राइफलमैन गोहार अली खान, जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री/19 राष्ट्रीय राइफल

84. 9107560 राइफलमैन मोहम्मद सयेद मन्नू, जम्मू-कश्मीर राइफल/18 राष्ट्रीय राइफल

85. 9422444 राइफलमैन टाशी लामा, 7/11 गोरखा राइफल

86. 9423805 राइफलमैन बीर बहादुर लिम्बु, 7/11 गोरखा राइफल

87. 9424796 राइफलमैन रोशन राई, 1/11 गोरखा राइफल (मरणोपरांत)

88. 12974366 राइफलमैन अब्दुल रहीम डार, 162 इन्फैन्ट्री बटालियन (टीए) जम्मू कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री/14 राष्ट्रीय राइफल

89. 12974389 राइफलमैन नजीर अमहद वानी, 162 इन्फैन्ट्री बटालियन (टीए) जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री/2 राष्ट्रीय राइफल

90. जी/3300733 राइफलमैन मोहम्मद ईब्राहिम खान, 33 असम राइफल

91. जी/3300911 राइफलमैन देवी सिंह विश्वकर्मा, 33 असम राइफल

92. 15324626 सैपर अलुका वर्गीस सातो, इंजीनियर्स कोर/44 राष्ट्रीय राइफल

93. 13622532 पैराट्रूपर हंग थंग लाम्रा, 4 पैराशूट रेजिमेंट (स्पेशल फोर्स)

94. 13624627 पैराट्रूपर विनय कुमार, 21 पैराशूट रेजिमेंट (स्पेशल फोर्स)

95. 15487058 सवार जोगिन्दर सिंह, कवचित कोर/33 राष्ट्रीय राइफल

96. 15491427 सवार सन्दीप सिंह गिल, कवचित कोर/33 राष्ट्रीय राइफल

97. 15163004 गनर जोय कुमार राभा, तोपखाना रेजिमेंट/172 फील्ड रेजिमेंट

98. 2694028 ग्रेनिडियर वीरेन्द्र सिंह, ग्रेनेडियर्स/39 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

99. 15615069 गार्ड्समैन नरेश कुमार, ब्रिगेड ऑफ द गार्ड्स/59 राष्ट्रीय राइफल

बरुण मित्रा
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

सं. 167-प्रेज/2007--राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके असाधारण साहसपूर्ण कार्यों के लिए "नौसेना मेडल/नेवी मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करती हैं :--

1. लेफ्टिनेंट कमांडर नितिन गुप्ता, (04908-बी)
2. लेफ्टिनेंट आर पी जगन मोहन (51700-ज़ेड)
3. आर एस बानी, पीओ सीडी (173998-ए)
4. सुधीर एमई I, (एसडी), (135472-टी)

बरुण मित्रा
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

सं. 168-प्रेज/2007--राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके असाधारण साहसपूर्ण कार्यों के लिए "वायुसेना मेडल/एयर फोर्स मेडल" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करती हैं :--

1. विंग कमांडर सुब्रातो कुन्डु, (20781) फ्लाईंग (पायलट)
2. विंग कमांडर जितेन्द्र यादव, (21009) फ्लाईंग (पायलट)

3. विंग कमांडर सरताज बेदी, (21024) फ्लाईंग (पायलट)

4. विंग कमांडर राजेश रणवान, (21812) फ्लाईंग (पायलट)

5. स्क्वाड्रन लीडर भूपेन्द्र सिंह सहरावत, (24203) फ्लाईंग (पायलट)

6. 768541 कार्पोरल प्रशान्त कुमार पति, इंजन फिटर

बरुण मित्रा
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

दिनांक 2 नवम्बर 2007

सं. 161-प्रेज/2007--भारत की राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को वर्ष 2007 के लिए नीचे लिखे जीवन रक्षा पदक श्रृंखला पुरस्कार प्रदान करने का अनुमोदन करती हैं :--

सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक

1. श्री सिजू डेविड, केरल
2. श्री प्रताप राई, सिक्किम
3. मास्टर वी. तेजा साई (मरणोपरांत), आन्ध्र प्रदेश
4. मास्टर सी वी एस दुर्गा डूंडीश्वर (मरणोपरांत), आन्ध्र प्रदेश

उत्तम जीवन रक्षा पदक

1. श्री मैक्किल एन. जोरज, केरल
2. श्री रवीन्द्र सांभाजी देसाई, महाराष्ट्र
3. श्री दामोदर प्रसाद शर्मा, राजस्थान
4. मास्टर योगेश कुमार जांगिड, राजस्थान
5. श्रीमती मंजूमा, उत्तर प्रदेश
6. श्री नगेन्द्र, दिल्ली
7. श्री मनोज चौहान (मरणोपरांत), मध्य प्रदेश

जीवन रक्षा पदक

1. श्री मनिभूंध बड़ा, असम
2. श्री व्यास पराग परसदराय, गुजरात
3. श्री प्रवीण कुमार, हिमाचल प्रदेश
4. श्री मुस्तफा मुआसज़्ज़म, जम्मू एवं कश्मीर
5. श्री संजीव सोमन्ना वाडियार, कर्नाटक
6. श्री मारकोस जोसफ, केरल
7. श्री सदाशिव बापू अम्बि, महाराष्ट्र
8. श्री अबूबाकर अली चाऔसे, महाराष्ट्र
9. श्री राकेश सालुंके, महाराष्ट्र
10. श्री श्याम गंगुर्डे, महाराष्ट्र
11. मास्टर कोमिंगसटार, ढिंगान, मेघालय
12. श्री निखोलस तीरसा, मेघालय
13. श्री एम. सी. ललतलेंगलिआना, मिजोरम
14. श्री कुमार पुजारी, उड़ीसा
15. श्री राकेश दास वेष्णव, राजस्थान
16. श्रीमती प्रवेश देवी डागुर, राजस्थान
17. सेल्वी सोनिया, तमिलनाडू
18. श्रीमती कांच्चना पि, तमिलनाडू
19. श्री पी. अब्दुल मनाफ, अंडमान एवं निकोबार
20. श्री विरेन्द्र कुमार, हरियाणा
21. श्रीमती ज़रीना खातून, पश्चिम बंगाल
22. कुमार अस्मा अय्यूब खान, महाराष्ट्र
23. कुमारी दीपा कुमारी, राजस्थान
24. मास्टर जतिन पी. वी., केरल
25. मास्टर बिजेश एम., केरल
26. श्री पार्थ एस. सुतारिया, महाराष्ट्र
27. कुमारी पुष्पा, छत्तीसगढ़
28. मास्टर लाहरिंगम अनाल, मणिपुर
29. कुमारी अनीता सिंह लोध, मध्य प्रदेश
30. कुमारी कशिका सिंह, चंडीगढ़
31. कुमारी पाओनम बेबीरोज़ देवी, मणिपुर
32. मास्टर सुधीर जाखड़, राजस्थान
33. श्री पवन कुमार पराशर, राजस्थान
34. मास्टर राजेन्द्र कुमार, राजस्थान

बरुण मित्रा
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

कारपोरेट कार्य मंत्रालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 23 अक्तूबर 2007

सं. पीएफजी-(487)/1989-प्रशा. II.--कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 209क की उपधारा के खण्ड (ii) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, क्षेत्रीय निदेशक (उत्तरी क्षेत्र) का कार्यालय, नोएडा, कारपोरेट कार्य मंत्रालय में उपनिदेशक (निरीक्षण) श्री बी. सी. मीणा को उक्त धारा 209क के उद्देश्यों के लिए प्राधिकृत करती है।

जे. एस. गुप्ता
अवर सचिव

सं. पीएफजी-(365)/78-प्रशा. II.--कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 209क की उपधारा के खण्ड (ii) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, क्षेत्रीय निदेशक (उत्तरी क्षेत्र) का कार्यालय, नोएडा, कारपोरेट कार्य मंत्रालय में संयुक्त निदेशक (निरीक्षण) श्री हरलाल को उक्त धारा 209क के उद्देश्यों के लिए प्राधिकृत करती है।

जे. एस. गुप्ता
अवर सचिव

वस्त्र मंत्रालय
विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय

नई दिल्ली-110066, दिनांक 15 अक्तूबर 2007

संकल्प

सं. के-12012/5/16/2006-पी एण्ड आर/7215--अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड का पुनर्गठन दिनांक 8 सितम्बर, 2006 के समसंख्यक संकल्प के तहत् 2 वर्ष की अवधि के लिए किया गया था। भारत सरकार ने डॉ. गोनूगुन्तला प्रसाद, मकान नं. 8-19-114/ए, लाइन मंगलदास नगर, ट्राडीकोंडा स्ट्रीट, गुन्टूर (आन्ध्र प्रदेश) को नए गैर-सरकारी सदस्य के रूप में अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड में शामिल करने का निर्णय लिया है जबकि 8 सितम्बर, 2006, 23 अक्तूबर, 2006, 22 एवं 27 नवम्बर, 2006, 5, 12, 21 एवं 22 दिसम्बर, 2006, 5 एवं 10 जनवरी, 2007, 1 एवं 14 फरवरी, 2007, 2, 7 एवं 9 मार्च, 2007, 8, 16, 19 मई, 2007, 25 जुलाई, 2007, 3, 29 अगस्त, 2007, 11 सितम्बर, 2007, 17 सितम्बर, 2007 एवं 24 सितम्बर, 2007 के संकल्प के तहत् गठित मौजूदा अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड के सभी सरकारी एवं गैर-सरकारी सदस्य यथावत बने रहेंगे।

पुनर्गठित अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड में अध्यक्ष, सदस्य सचिव सहित 24 सरकारी सदस्यों तथा 61 गैर-सरकारी सदस्यों को शामिल करते हुए बोर्ड की वर्तमान संख्या 86 सदस्य हो जाएगी।

तथापि, दिनांक 8 सितम्बर, 2006 के संकल्प में दर्ज अन्य सभी निबंधन एवं शर्तें वही रहेंगी तथा उनमें कोई परिवर्तन नहीं होगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी संबंधितों को प्रेषित की जाए तथा इसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

डॉ. संदीप श्रीवास्तव
अपर विकास आयुक्त (हस्तशिल्प)

रसायन और उर्वरक मंत्रालय
(उर्वरक विभाग)
नई दिल्ली, दिनांक 25 अक्तूबर 2007

संकल्प

सं. 12019/7/2005-एफपीपी--यूरिया इकाइयों के लिए नई मूल्य निर्धारण योजना के प्रशासन और प्रचालन के लिए रसायन और उर्वरक मंत्रालय के दिनांक 13.3.2003 के संकल्प सं. 12019/5/98-एफपीपी द्वारा उर्वरक उद्योग समन्वय समिति का पुनर्गठन किया गया था। उर्वरक उद्योग समन्वय समिति में उर्वरक सदस्य श्री होमी आर. खुर्सोखान, प्रबंध निदेशक, टाटा केमिकल्स लिमिटेड (टीसीएल) और श्री बी. डी. सिन्हा, प्रबंध निदेशक, कृभको का कार्यकाल 4.10.2007 को समाप्त होने के कारण हुई रिक्ति के फलस्वरूप श्री जी. एस. मंगत, अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमि., नोएडा और श्री के. एस. राजन अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, नागार्जुन फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड, हैदराबाद को उर्वरक उद्योग समन्वय समिति (एफआईसीसी) में सदस्य नियुक्त किया जाता है।

सर्वश्री जी. एस. मंगत, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एनएफएल, नोएडा और श्री के. एस. राजू, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, एनएफसीएल, हैदराबाद की एफआईसीसी में नियुक्ति, संकल्प के प्रकाशित होने की तारीख से दो वर्ष के लिए या अगले आदेश, जो भी पहले हो तक के लिए प्रभावी होगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति लोक सभा सचिवालय और राज्य सभा सचिवालय और भारत सरकार के संबंधित मंत्रालयों और विभागों को भेज दी जाए।

2. यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सामान्य सूचना के लिए भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

दीपक सिंघल
संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi-110 001, the 15th August 2007

No. 162-Pres/2007.—The President is pleased to approve the award of the "Ashoka Chakra" to the under mentioned persons for the acts of most conspicuous gallantry :—

IC-62541 CAPTAIN HARSHAN R
2 PARACHUTE REGIMENT (SPECIAL FORCES)
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 20 March 2007)

Captain Harshan R had been relentlessly tracking foreign terrorists in North Kashmir. On 07 March 2007 the officer swiftly organized his team for a surgical operaion despite inhospitable terrain and single handedly killed two territorists one of whom was Chief of a terrorist outfit in North Kashmir.

Again on 20 March 2007 on specific input, Captain Harshan unmindful of inclement weather and continuous snowfall moved with his troop to the suspect house and cordoned it off. At 0430 hours four terrorists attempted to break cordon and rushed out firing towards Captain Harshan and his buddy. Despite being outnumbered, Captain Harshan displayed cool nerves and killed one terrorist on the spot but received gunsot wound on his thigh. Unmindful of his injuries the officer displaying conspicuous bravery, killed another terrorist charging at him. In the process, the officer again received another gunshot would on his neck. Despite being grievously injured, he continued engaging the terrorist and before succumbing to his injuries, he injured a third terrorist who was killed later.

Captain Harshan has displayed rarest of rare courage in these two gallant actions in which he personally eliminated four terrorists.

Captain Harshan R displayed leadership of the highest order and showed unparallel courage against grave odds and made the supreme sacrifice against fighting the terrorists.

JC-593527 NAIB SUBEDAR CHUNNI LAL, VrC, SM
8 JAMMU AND KASHMIR LIGHT INFANTRY
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 24 June 2007)

On 24 June 2007 on receiving information about likely infiltraion of a group of terrorists in Northern sector, Naib Subedar Chunni Lal re-sited ambushes to block the route. At 0700 hours while leading search, the small team of Naib Subedar Chunni Lal drew effective fire from hiding terrorists. He retaliated instantaneously with fire, maneuvered his troops to seal all escape routes. On spotting a terrorist hiding behind the boulders, he tactfully closed in and shot him at close range. The other terrorist spotted movement of his team and brought down effective fire injuring two soldiers. Naib Subedar Chunni Lal single handedly evacuated both the casualities inspite of effective fire from terrorists. He regained the command and control and resumed further search and eliminated another terrorist. On seeing this other terrorists attempted to break contact. Realizing the possible escape by the terrorist he quickly moved to block the escape route. The remaining terrorists brought down effective fire. Sensing the critically of the situation and the likelihood of suffering more casualities, Naib Subedar Chunni Lal in a daring act charged into the direction of fire killing one more terrorist on the spot. However, he sustained multiple gun shot wounds in his groin and lower abdomen. Bleeding profusely, he continued to fire at terrorists blocking their escape routes and asked his colleagues to go ahead with the task which resulted in elimination of remaining two hardcore terrorists and saving life of numerous soldiers.

Naib Subedar Chunni Lal consistently displayed excemplary gallantry, courage and supreme sacrifice in the highest traditions of the Indian Army by personally eliminating three terrorists and inspiring his small team in killing a total of five terrorists in the entire operation.

IC-48714 COLONEL VASANTH VENUGOPAL
9 MARATHA LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 31 July 2007)

Colonel Vasanth Venugopal was commanding a Battalion deployed on the Line of Control in rugged and inaccessible terrain in Uri Sector in J&K.

On 30 July 2007, on receiving information of infiltration of terrorists from across the Line of Control, Colonel Vasanth Venugopal personally took command of a body of troops, moved swiftly and intercepted the infiltrating group of terrorists who were attempting to escape hack across the Line of Control on being detected. Anticipating this move, Colonel Venugopal displaying determined and resolute leadership, deftly organized his troops to block the avenues of escape. Taking advantage of dense foliage, terrorists tried to evade by hiding in the jungle. Colonel Venugopal, leading his troops from the front, engaged the terrorists in a fierce fire fight closing in on the terrorist. This exhausting engagement went on through out the entire day and night but succeeded in foiling all attempts by the terrorists to make good their escape using cover of darkness and foliage in the night. At daybreak on 31 July 2007, Colonel Venugopal, wanting to take advantage of the first light, rallied his men and personally led the operation to flush out the terrorists who had managed to occupy dominating position. Outflanking the terrorist location, Colonel Venugopal, engaged the terrorists from close quarter killing one terrorist but was himself injured. Unmindful of his injury and bleeding profusely he exhorted his men to block all escape routes and killed another terrorist trying to escape. In the meanwhile, a terrorist fired a burst, which hit Colonel Venugopal. Mustering the last reserves of energy, in a daring act before losing consciousness, Colonel Venugopal fired at the terrorist and killed him. However, he later succumbed to his injuries and made the supreme sacrifice for the mother land.

Colonel Vasanth Venugopal, thus, displayed outstanding bravery, courage and resolute leadership resulted in determined perseverance by his men to eliminate the complete group of eight foreign terrorists.

BARUN MITRA
Jt. Secy.

No. 163-Pres/2007—The President is pleased to approve the award of the "Kirti Chakra" to the under mentioned persons for the acts of conspicuous gallantry :—

SHRI DAYANAND PANDEY
UTTAR PRADESH (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 01 August 2005)

On 01 August 2005 at 1030 hours, Shri Dayanand Pandey, Postal Assistant was on duty at Baskhari Sub Post Office, Faizabad. Suddenly, three robbers barged into the Post Office with the intention of looting government money. At that moment, a cash of Rs. 3,38,400/- was available in the Post Office. The robbers fired at Shri Pandey. However, unmindful of his injuries, Shri Pandey resisted the looters valiantly. On seeing the resistance from Shri Pandey the looters decamped with some cash. The courageous act of Shri Pandey saved a big chunk of money at the cost of his life.

Shri Dayanand Pandey displayed exemplary courage and bravery in fighting with the robbers and laid down his life while saving government money.

SHRI MOHD. SHAN AHMED
UTTAR PRADESH (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 26 December 2005)

On 26 December 2005, Shri Mohd. Shan Ahmed who was posted as Cash Overseer at Head Post Office, Jhansi, Uttar Pradesh, was entrusted to deposit Rs. 16,02,000/- at a nearby State Bank. He was travelling in an Autorickshaw along with other postal personnel carrying the cash bag while four other postal personnel were giving them escort on motorcycle. When the Autorickshaw, was close to the bank, it was attacked by some armed miscreants. Seeing the driver being shot by the bullet, the accompanying persons ran away out of fear. Nonetheless, Shri Ahmed refused to hand over the bag to the looters and fought valiantly to save the government money until he was shot in the chest and collapsed consequently. The looters snatched the bag from his hands and fled away. Shri Ahmed later succumbed to fatal injuries.

Shri Mohd. shan Ahmed displayed conspicuous gallant action, rare courage and exemplary devotion to duty, unmindful of his own safety and made the supreme sacrifice of hs life in fighting with the looters.

SHRI TARUN KUMAR DUTTA
ASSAM (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 12 September 2006)

Shri Tarun Kumar Dutta took many bold and ingenious actions to check smuggling of drugs in the Shillong region. He had been instrumental in the seizure of 97,465 kg. of Ganja, 100kg of Ephedrine and 6.5 kg of Hashish. He led operations in difficult jungles, mountain terrains and insurgent infested areas. He was acting against the interest of drug cartels without fear of his life with the objective of eradicating the scourge of drug smuggling. In doing so, he was made target by the mafia and was killed on 12 September 2006.

Shri Tarun Kumar Dutta showed peerless devotion to duty all along his career, exemplary courage and excellence and sacrificed his life for the interest of nation.

3995047 NAIK RADHAKRISHNAN C
10 MADRAS REGIMENT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 18 October 2006)

On 18 October 2006 at 0700 hours Surveillance Detachment in an area in Kupwara District (J&K) observed suspicious movement. Stops were placed covering escape routes and extensive search was launched. Naik Radhakrishnan C was the commander of a search team.

While combing operations were in progress in the inhospitable terrain, Naik Radhakrishnan C detected and heard suspicious movements of terrorists and immediately informed the other search teams around. As there was not much time to react Naik Radhakrishnan immediately jumped over bushes and tried to maintain contact with the terrorists who were trying to break the cordon and escape. In the ensuing close firefight, he killed one terrorist. However in the process he got wounded grievously in the courageous charge made on the terrorists. The other terrorists sensing the aggressive spirit and indomitable will of the brave soldier made a desperate attempt to break contact by firing indiscriminately and hurling grenades at him. Despite the heavy exchange of fire and severity of his injuries Naik Radhakrishnan maintained close contact, fire back at the terrorists and pinned them down. Thereafter displaying courage, grit and determination he crawled forward and lobbed grenades at the terrorists thereby killing the other two terrorists. Throughout the fire fight, Naik Radhakrishnan despite being injured refused to withdraw or be evacuated for medical help. Naik Radhakrishnan was subsequently evacuated by air but succumbed to his injuries enroute and made supreme sacrifice for the motherland.

Naik Radhakrishnan C displayed conspicuous gallantry, unflinching grit and raw courage at the peril of his own life in fighting the terrorists.

IC-67341 LIEUTENANT PANKAJ KUMAR
7/11 GORKHA RIFLES

(Effective date of the award : 5 April 2007)

Based on generic information of likely movement of terrorists in the area, Lieutenant Pankaj Kumar alongwith a party launched a search and destroy mission at 0100 hours on 05 April 2007 in an area in the Eastern Sector.

When Lieutenant Pankaj Kumar alongwith two Other Ranks were moving towards the first hut for search, two terrorists jumped out of the hut firing. One terrorist also lobbed a grenade at the officer. Lieutenant Pankaj Kumar immediately retumed the fire and in an intense gun battle, shot one terrorist dead.

Meanwhile, six other terrorists hiding in nearby huts also opened fire and started fleeing towards the surrounding jungle. Lieutenant Pankaj Kumar quickly readjusted his cordon while bringing down heavy volume of accurate fire upon the fleeing terrorists. He chased two terrorists over approximately 1.5 Kilometers within the jungle and shot them dead, even as they lobbed a grenade.

Licutenant Pankaj Kumar displayed conspicuous gallantary exemplary leadership and selfless dedication while fighting the terrorists.

SS-41287 CAPTAIN ABHINAV HANDA
9 MARATHA LIGHT INFANTRY

(Effective date of the award : 31 July 2007)

On 30 July 2007, based on information of infiltration of terrorists from across the life of control in Uri Sector of J&K, Captain Abhinav Handa moved swiftly to the site and was commanding the Ghatak team that pursued and cordoned the terrorists and thereafter carried out operations to flush out the terrorists who had managed to hide inside a rocky cave in the inhospitable treacherous dominating heights of Chota Kazinag Dhar ranges. The progress of operation saw intense fire fight with the terrorists and this exhausting engagement went on for seventy two hours. During this period, Captain Handa continued to direct accurate covering fire, enabling the quick reaction troops led by his commanding officer to eliminate three terrorists. On 31 July 2007, after the Commanding Officer bravely fell to terrorist bullets, Captain Handa exhibited exceptional leadership qualities, mental agility, composure in the face of heavy odds to take charge of the operation on ground. Entrenched inside the rocky cave, terrorists continued to effectively fire at own troops on the lower slopes with grenades and fire from automatic rifles. Displaying presence of mind Captain Handa closed in to the terrorist position and after a fierce fire fight, managed to eliminate one foreign terrorist.

Captain Abhinav Handa displayed outstanding leadership, indomitable courage under most trying conditions and successfully controlled the operation by leading from the front.

BARUN MITRA
Jt. Secy.

No. 164-Pres/2007—The President is pleased to approve the award of the "Shaurya Chakra" to the under mentioned persons for the acts of gallantry :—

737836 SERGEANT JAI PRAKASH SHUKLA
CLERK GENERAL DUTIES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 23 August 2006)

Sergeant Jai Prakash Shukla was on the posted strength of a Pechora Squadron at Air Force Station, Utarlai, (Barmer). Barmer District experienced incessant rains and flash floods. On 23 August 2006, Sgt Shukla along with other Air Warriors of the unit proceeded to surrounding villages to assist the families of some civilians working at this Station.

While returning, some villagers requested the Air Warriors to rescue four persons perched on treetops and struggling for life in the flood. The task of rescuing the persons from dangerously high levels of the tubulent flood waters was extremely challenging and evidently hazardous. While other members of the team did not dare to enter torrential current of flood waters, Sgt Shukla in a true tradition of soldier, readily volunteered to rescue these persons. He swam in the strong current in 20 feet deep flood waters, with the single-minded purpose of rescuing the helpless persons, who were under the threat of being washed away. However, after swimming for about 100 meters, he got sucked down in the swirling water and could not extricate himself. His body was recovered after two days.

Sergeant Jai Prakash Shukla displayed extraordinary courage and valour in extreme circumstances, and made the supreme sacrifice while trying to save fellow citizens.

15481089 SOWAR SULTAN SINGH
ARMOURED CORPS/24 RASHTRIYA RIFLES
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 30 August 2006)

On 30 August 2006 information was received about the terrorists likely to cross a bridge in Srinagar. Sowar Sultan Singh was part of the ambush party waiting near the bridge. The terrorists approached the bridge very close to his location almost from behind. He showed tactical acumen well beyond his age and service by withholding fire till the terrorists were just two meters away. In the intense fire fight that ensued, Sowar Sultan Singh killed one terrorist in nearly hand to hand battle, while suffering multiple gun shot wounds. Despite bleeding profusely and completely disregarding his pain and injuries, he again faced the hail of bullets from the second terrorist, who was a few meters behind the killed terrorist. Displaying conspicuous bravery of exceptional order Sowar Sultan Singh engaged the second terrorist who was taken aback and killed him before he could cause casualties to other members of the ambush party. Later, Sowar Sultan singh succumbed to his injuries.

Sowar Sultan Singh displayed indomitable determination and exceptional bravery and made the supreme sacrifice for the nation while fighting the terrorists.

SS-40823 CAPTAIN SUNIL YADAV
CORPS OF SIGNALS/26 RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : 18 September 2006)

On 18 September 2006, an operational column under Captain Sunil Yadav was launched to search and destroy terrorists hiding in a maize field in a village in district Doda (J&K).

Captain Sunil Yadav quietly closed in and hid the parties in the maize fields which remained undetected for nearly sixteen hours. On confirmation regarding presence of terrorists in the nearby maize field one of parties was asked to show its presence the terrorists finding themselves besieged started firing indiscriminately and ran out of the maize field. Captain Sunil Yadav showing exceptional initiative readjusted his position, took cover behind a rock and brought down heavy volume of fire from his AK-47 and shot dead two terrorists. The third terrorist ran back inside the maize field. Captain Sunil Yadav disregarding his personal safety chased the terrorist inside the maize field and single handedly shot him.

Captain Sunil Yadav displayed conspicuous bravery, raw courage and personal valour of an exceptional order in the best tradition of the Indian Army in fighting the terrorists.

SS-41969 LIEUTENANT KRISHAN DAYAL SINGH RATHORE
REGIMENT OF ARTILLERY/42 FIELD REGIMENT

(Effective date of the award : 24 September 2006)

Lieutenant Krishan Dayal Singh Rathore, based on the intelligence provided by own sources launched a cordon and search operation on 24 September 2006 in a village in district Tinsukia, Assam.

The cordon was established in the night and was reorganised at first light. A party led by Lieutenant Rathore started house to house search. At 1400 hrs, as the party approached one of the suspect houses, the search party was fired upon and a grenade was lobbed from the house. On spotting a terrorist, Lieutenant Rathore instantaneously shot the terrorist dead even while the grenade burst close to him and caused him multiple splinter injuries. Another terrorist opened indiscriminate fire on own team from the house. Unmindful of his own safety, the officer alongwith his buddy, under the shield of covering fire provided by an OR, crawled into the house and closed in with the second terrorist and injured him in a fire fight as he lobbed another grenade towards them. Thus despite being injured and bleeding profusely, the officer pinned down and killed one hardcore terrorist and injured another terrorist leading to huge recovery of arms, amn, explosives and large amount of cash.

Lieutenant Krishan Dayal Singh Rathore displayed conspicuous gallantry, indomitable courage under grave danger to own life in fighting the terrorists.

4281832 SEPOY RAHUL
4 BIHAR REGIMENT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 7 October 2006)

On 7 October 2006 at mid night, an infiltrating group was engaged by Ghatak Platoon in an area in Poonch district of J&K, as a result one terrorist was killed and consequent encounter continued throughout the night. At first light on 8 October during the readjustment in deployment of troops, the cut off group of Sepoy Rahul observed one terrorist having taken position 10—15 meters on top of them in jungle. Sensing absolute danger to his entire party, Sepoy Rahul with his buddy decided to close in with the terrorist. However, being in open and below, the terrorist spotted their movement and engaged them with fire of AK-47. Sepoy Rahul received a burst on his chest and was grievously injured. However, unmindful of injuries and displaying unparalled courage, he kept closing in and finally shot dead the terrorist who was causing havoc on entire body of troops. During this course, Sepoy Rahul succumbed to his injuries.

Sepoy Rahul displayed exemplary courage, unflinching grit and conspicuous bravery in the face of heavy odds and made the supreme sacrifice in the highest tradition of the Indian Army.

15326453 SAPPER SHINDE RAMACHANDRA SHIVAJI
CORPS OF ENGINEERS/44 RASHTRIYA RIFLES
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 12 October 2006)

On specific information an area in Pulwama district of J&K was cordoned including a school juxtaposed to target house making its inclusion inescapable. The team comprising Sapper Shinde Ramachandra Shivaji sensing imminent threat to innocent lives, ensured quick evacuation of approximately 1400 trapped school children to safer location. Sapper Shinde himself volunteered for the task. While evacuating last group, terrorists in a bid to escape fired at him. Evaluating the criticality of situation he restrained from returning fire and alongwith huddled students immediately jumped out of the danger area suffering injuries in the process.

Despite injuries he refused evacuation and was the turnkey in locating terrorist who shifted to another house. At 1830 hours terrorists fired heavily to break the cordon but he steadfastly ensured terrorists remained hold up by effective fire. In ensuing gun-battle he dauntingly and gallantry forged ahead with utter disregard to personal safety and with precise fire killed both the terrorists including one foreigner. He was grievously injured and later attained martyrdom in most befitting spirit of the Army. His courage, valour and extreme compassion towards humanity saved hundreds of innocent lives and ensured elimination of terrorists.

Sapper Shinde Ramachandra Shivaji displayed his exemplary courage, extreme devotion to huminitarian cause and an act of conspicuous gallantry of exceptional order and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

JC-439107 SUBEDAR MANOHAR P
10 MADRAS REGIMENT

(Effective date of the award : 18 October 2006)

On 18 October 2006 at 0700 hrs surveillance detachment at a place in a forest in district Kupwara (J&K) observed suspicious movement. Extensive search was launched. Search party led by Subedar Manohar P Spotted five terrorists. Displaying value and professional acument the JCO closed onto the terrorists and pinned them down. Three terrorists were eliminated in the ensuing firefight. However his buddy hit by a gun shot, was lying in the line of terrorist fire. Unfimindful of his personal safety, Subedar Manohar P crawled to the site and dragged his buddy out of encounter site and assisted in evacuation.

Subedar Manohar P reorganised his party, chased the fleeing terrorists who had hid behind boulders, stealthily approached their hide and eliminated one terrorist by lobbing grenades and fire from his personal weapon. Taking advantage of dence undergrowth and darkness another terrorist fled into the jungle. Subedar Manohar P continued exhaustive search and on 20 Oct 2006 spotted the terrorist and quickly readjusted his party. Subedar Manohar P being under direct terrorist fire repositioned; himself and displaying raw courage elimianted the terrorist at close range.

Subedar Manohar P displayed gallant act of bravery dyamic leadership and selfless devotion at the peril of his own safety in fighting the terrorists.

2693628 LANCE NAIK JYOTISH PRAKASH
GRENADIERS/39 RASHTRIYA RIFLES
(POSTHOMOUS)

(Effective date of the award : 26 October 2006)

Lance Nike Jyotish Prakash was part of Company Commander's close group during an operation in a village in Poonch district (J&K) conducted from 26 October 2006 to 29 October 2006.

During the search Lance Naik Jyotish Prakash spotted two terrorists trying to run and hide behind boulders in the nullah, he immediately closed on to the terrorists, killed the first one on the move. A search was commenced to track balance of the terrorists hidden in thick foliage and boulders and eliminate them. During the search Lance Naik Jyotish spotted a terrorist barely two to three meters from the search party. Sensing apparent danger to his comrades, with total disregard to his personal safety, Lance Naik Jyotish pounced on the terrorist under his indiscriminate fire and eliminated him at point blank range later he succumbed to his injuries.

Lance Naik Jyotish Prakash displayed indomitable courage, conspicuous bravery and total disregard to personal safety to save his comrades and sacrificed his life in keeping with the highest traditions of the Indian Army while fighting the terrorists.

15325573 SAPPER BABU RAM VEERANNA PATTAR
5 ENGINEER REGIMENT (POSTHUMOUS)

(Effectivde date of the award : 04 November 2006)

Sapper Babu Ram Veeranna Pattar was part of Flood Relief/Rescue Team deployed near Pedana Village, Krishna District, Andhra Pradesh. On 04 November 2006, approximately at 1500 hours he along with three military persons of 5 Engineer Regiment, and eight other civilians were proceeding towards a marooned village in flood waters in a Boat Assault Universal Type 1A (BAUT), as part of relief operations. Enroute, the Out Board Motor (OBM) of the boat got entangled in the fisherman nets laid under water and the OBM stopped.

Due to heavy current of water the boat drifted into a drain and hit concrete over bridge. Despite repeated warnings by rescue team not to panic, the civilians panicked and rocked the boat, resulting in capsizing the boat. The civilians fel into the flood waters. At this stage Sapper Babu Ram Veeranna Pattar, unimindful of his personal safety helped a civil lady by swimming with one hand and simultaneously lifting her with other hand. He then saved lives of two more persons including one MLA who were drowning in flood waters, before he suffered a head injury and got stuck in sea weeds and T beams of the bridge in the fast current of water and laid down his life. His mortal remains were later recovered at the bridge site on 09 November 2006.

Sapper Babu Ram Veeranna Pattar, thus, displayed act of gallantry of the highest order and exemplary courage while performing the duty beyond the ordinary nature and made the supreme sacrifice in attemping to rescue the civilians.

14912497 COMPANY HAVILDAR MAJOR RAMESH
CHANDRA PANDEY
MECHANISED INFANTRY/26 RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : 08 November 2006)

On 08 November 2006 an operational column was launched under Company Havildar Major Ramesh Chandra Pandey to destroy terrorists hiding in a house in a village in Doda district (J&K). On confirmation of terrorists' presence, he immediately carried out mental appreciation and cordoned the target house at 1430 hours. He evacuated the civilians to safe areas and asked the terrorists to surrender. The terrorists finding themselves besieged started firing indiscriminately and threw grenades at own column. Company Havildar Major Pandey sustained splinter injury on right thigh but refused to be evacuated and further closed in. with total disregard to personal safety, he alongwith his buddy crawled ahead under terrorist fire, threw a grenade and bringing down heavy volume of fire shot dead one terrorist at close range. Another terrorist in a bid to escape came out firing and was shot dead on the spot by Company Havildar Major Pandey who was covering the door.

Company Havildar Major Ramesh Chandra Pandey displayed cospicuous bravery, raw courage and

personal valour on an exceptional order in fighting the terrorists.

IC-59741 MAJOR AMAN OBEROI
ARMOURED CORPS/22 RASHITRYA RIFLES

(Effective date of the award : 23 December 2006)

Major Aman Oberoi was the Officer Commanding of a Company of a Rashtriya Rifles Battalion. On 23 December 2006, the officer delingetly developed hard intelligence about presence of two terrorists in a village in Sopore district (J&K). The officer informed Battalion Headquarters and he himself with quick reaction team rushed and cordoned the target houses thereby maintaining total surprise. Cordon was further tightened by reinforcements.

At 1730 hours while search was in progress the terrorists brought down heavy volume of fire on troops from inside the concrete house. Since the day was passing last light, Major Oberoi, when crawled close to the window of target house, his helmet was hit by volume of terrorists' fire. The officer with total disregard to self life, facing bullets from terrorists, crawled from one room to another, lobbed a grenade inside the room, using effective room intervention techniques, entered the room and killed two terrorists on an outfit from point blank range. Large number of arms and ammunition was recovered from the terrorists.

Major Aman Oberoi displayed cultivation of hard intelligence, displaying indomitable courage and exhibiting outstanding leadership in fighting the terrorists.

IC-55281 MAJOR SANJAY KUMAR TANWAR
RAJPUT REGIMENT/58 RASHITRIYA RIFLES

(Effective date of the award : 02 January 2007)

On 02 January 2007, Major Sanjay Kumar Tanwar, led a cordon and search operation in general area in district Udhampur (J&K). Using slithering ropes to negotiate steep slopes and achieve surprise, the target dhok was cordoned on 04 January 2007 at 0400 hours. At 0645 hours one terrorist came running out, firing indiscriminately on own troops. Unmindful of his personal safety, the officer chased the fleeing terrorist and shot him.

He then directed the Rocket Launcher to fire on the target dhok to neutralise the heavy fire of others. Consequently, two terrorists who came out firing were shot. As hostile fire of the fourth terrorist inside was still being drawn, the officer crawled up to place explosives to blast the side wall and force him to come out. Once again, displaying rare courage despite being under fire the officer crawled to the opening created and fired at the terrorist and killed him.

Major Sanjay Kumar Tanwar displayed act of exceptional gallantry of a high order with total disregard to personal safety and leadership in face of hostile fire.

IC-55096 MAJOR PRATUL GAURANG MEHTA
REGIMENT OF ARTILLERY/172 FIELD REGIMENT

(Effective date of the award : 02 April 2007)

Major Pratul Gaurang Mehta, as Company Commander of the Company Operating Base (COB) deployed for Counter Terrorist Operations in the Eastern Sector carried out two surgical operations as under :—

On 09 January 2007, Major Pratul Mehta, when informed about presence of three heavily armed terrorists in a house in a local village rushed to the spot with his Quick Reaction Team (QRT) and cordoned off the house. He tasked his team to provide fire support and he with utter disregard to his personal safety, charged into the house and overpowered the terrorist on duty in a hand to hand combat. The two remainder terrorists were also quickly overpowered by the other two jawans who followed him. The operation led to apprehension of three hardcore terrorists and recovery of two AK-56 Light Machine Guns, one pistol and two grenades.

On 02 April 2007, Major Pratul Mehta along with team, while on a patrol, received information regarding presence of four heavily armed terrorists in a house in another village. He immediately rushed to the site and cordoned off the house. On being challenged, the terrorists resorted to indiscriminate firing and heavy exchange of the fire ensued. When there was a lull in firing, Major Mehta along with his two buddies rushed into the house and shot dead the two terrorists. The two other injured terrorists were shot dead by other members of the team. The operation led to elimination of four hardcore terrorists and recovery of two AK-47 rifles.

Major Pratul Gaurang Mehta displayed dynamic leadership, bravery of the highest order with utter disregard to personal safety in carrying out the operation against the terrorists.

IC-54541 MAJOR PARAMVIR SINGH JAMWAL
MECHANISED INFANTRY/9 RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : 17 January 2007)

Based on information provided by unit source, joint parties of a Rashtriya Rifles Battalion Special Operation Group, Kulgam, and an Infantry Battalion (Territorial Army) alongwith a Battalion of Central Reserve Police Force under took cordon and search of a village in district Anantnag (J&K) on 17 January 2007.

While the search was in progress, terrorists hiding inside a house brought down indiscriminate Small Arms fire and lobbed grenades on own parties. Sensing danger to own troops, Major Paramvir Singh Jamwal crawled to a dangerous position despite effective terrorists' fire, brought down accurate Multi Grenade Launcher fire, moved ahead and lobbed hand grenades and simultaneously fired bursts from

his rifle eliminating two terrorists. The officer yet observed suspicious movement in the window from where terrorist opened indiscriminate fire. Displaying extreme presence of mind the officer at his own peril crawled sideways surprised and eliminated the third terrorist in a very close quarter battle.

Major Paramvir Singh Jamwal displayed conspicuous gallantry, saving lives of his own troops in the highest traditions of Indian Army and eliminating three hardcore terrorists of an outlawed group.

9106682 RIFLEMAN RAIECE AHMAD GANAIE
JAMMU & KASHMIR LIGHT INFANTRY/
50 RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : 13 February 2007)

Based on information of Surveillance Detachment in a village in Pulwama district (J&K) a Cordon and search operation was launched by a Rashtriya Rifles Battalion on 13 February 2007.

At 1815 hours while de-inducting, suspicious movement was noticed near the village. The leading scout Rifleman Ganaie challenged two terrorists. Immediately, party came under intense and effective fire from terrorists. Displaying high standards of battle craft, he took cover, retaliated and injured one terrorist. Intense firefight ensued. Realizing grave danger to his colleagues, he crawled through adjoining nala and positioned himself at the mouth of the nala without detection. In a flash, displaying exceptional courage at his own peril he charged at and killed the injured terrorist instantly. The other terrorist lobbed grenades and fired at him. Undeterred, he repeatedly exposed himself to danger. Finally, displaying conspicuous bravery, he charged at the second terrorist and killed him at point blank range.

Rifleman Raiece Ahmad Ganaie displayed indomitable courage, comradeship and professional acumen in fighting the terrorists.

4195647 LANCE NAIK BHAWAN SINGH
2 PARACHUTE REGIMENT (SPECIAL FORCES)
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 20 March 2007)

On 20 March 2007 the number one troop of a battalion of the parachute regiment (special forces) moved to a village in district Kupwara (J&K) on specified input and cordoned the suspect house by 0320 hours. Lance Naik Bhawan Singh was member of the troop.

At 0350 hours taking advantage of inclement weather and zero visibility four terrorists attempted to break cordon and rushed out firing towards Lance Naik Bhawan Singh and the troop commander. Despite being outnumbered both stood their ground and engaged the terrorists. The troop commander killed two of them but received multiple gunshots and fell. On seeing this Lance Naik Bhawan Singh with utter disregard to personal safety came out from behind cover and rushed to his troop commanders' rescue under heavy automatic fire. While trying to extricate the troop commander from the firing zone he received a gunshot wound and was grievously wounded. He however continued to drag his troop commander and succeeded in getting him out of the fire before succumbing to his injuries.

Lance Naik Bhawan Singh displayed exemplary courage and espirit de corps in keeping with the highest traditions of the Indian Army in trying to rescue the troop commander.

IC-62560 CAPTAIN KAUSHAL KASHYAP
21 PARACHUT REGIMENT (SPECIAL FORCES)

(Effective date of the award : 27 March 2007)

Captain Kaushal Kashyap Troop Leader of 'D' Assault Team, 21 Para (Special Forces) deployed in Arunachal Pradesh was instrumental in establishing an effective clandestine intelligence network in a very short span of time. Being a native of Assam, he used language behavioural and cultural skills to successfully merge with the local populace to obtain credible intelligence on terrorists' movement in Manubam Reserve Forest.

On 27 March 2007 Capt Kashyap through his relentless intelligence gathering came upon a valuable input about meeting of senior terrorists' leadership deep inside Manubam forest to plan and finalise sabotage activities. Speed and surprise being of paramount importance, Capt Kashyap quickly made a meticulous plan to negate terrorist nefarious designs. After two days of X-country move through unfamiliar rugged terrain with stealth, he with his troop clandestinely established surveillance over nala Kanchange Hka on 29 March 2007. At 0600 hours on 30 March 2007, they observed three terrorists approaching. On being challenged by the scouts, the terrorists fired indiscriminately. Capt Kashyap with his troop retaliated with accurate fire and in ensuring firefight killed two terrorists from a very close quarter. These terrorists were also instrumental in masterminding killed on Bihari labourers in Upper Assam in January 2007.

Captain Kaushal Kashyap displayed selfless dedication to duty and tenacity in intelligence collection, exemplary leadership, conspicuous bravery and presence of mind in an intense close quarter battle that killed two top terrorists.

IC-57912 MAJOR SWAPNEESH PARIHAR
REGIMENT OF ARTILLERY/174 FIELD REGIMENT

(Effective date of the award : 31 March 2007)

On 31 March 2007, based on information of four terrorists hiding in a village in Sibsagar District, Assam, Major Swapneesh Parihar rushed to the location with his Quick Reaction Team.

The officer laid quick cordon with the available strength and concurrently commenced the search operation. The

officer closed in on the target house and to avoid any collateral damage to other civilians, personally led the search team. On entering, one of the terrorists fired on the officer from close range grievously injuring him as also causing his personal weapon to fall off. Undaunted by his grievous injuries and in a rare feat of aggressiveness and courage, the officer pounced on the terrorist, snatched his weapon and killed him.

Although critically wounded with five bullets, the officer refused to be evacuated and continued to direct his team to tighten the cordon till arrival of reinforcements. Following search operations led to elimination of one more hardcore terrorists and recovery of a AK-56 rifle and large quantity of ammunition and explosives.

Major Swapneesh Parihar displayed act of conspicuous bravery, unmatched courage and utter disregard to personal safety in carrying out the operation against the terrorists.

12944610 LANCE NAIK RAVINDER SINGH MALIK
159 INFANTRY BATTALION (TA) (H&H) DOGRA
(POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 01 April 2007)

On 01 April 2007, Lance Naik Ravinder Singh Malik was instrumental in generating pin point intelligence of about two terrorists hiding in the general area in Doda district (J&K). Based on the input, columns were launched. Lance Naik Ravinder Singh Malik, scout of the leading column carrying out search, located the highly camouflaged hideout immediately upon which he was fired upon, but with the total disregard to personal safety he closed in, fired and injured two terrorists. In the firefight he sustained gun shot wound at left lateral chest due to terrorist fire. Even though grievously injured he tactically further closed in with the terrorists and killed both of them. Later on he succumbed to his injuries.

Lance Naik Ravinder Singh Malik displayed exemplary courage, unflinching grit and conspicuous bravery in face of heavy odds and made the supreme sacrifice in the highest traditions of Indian Army while fighting the terrorists.

2797930 LANCE NAIK BACHHAV SHASHIKANT
GANPAT
9 MARATHA LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 31 July 2007)

On 30 July 2007, based on information about likely infiltration of terrorists from across the Line of Control in Uri Sector of Jammu & Kashmir, Lance Naik Bachhav Shashikant Ganpat was part of the Commanding Officer's Quick Reaction Team which swiftly moved to the infiltration site. Stunned at the audacity and swift movement of own troops, the alarmed terrorists resorted to indiscriminate firing on 31 July 2007 and tried to evade across the line of control. Sensing the urgency to prevent the terrorists from fleeing across the line of control, Lance Naik Bachhav in a bold daring action out manoeuvred the fleeing terrorists. During heavy exchange of fire Lance Naik Bachhav sustained gun shot wound. Unmindful of his injury, Lance Naik Bachhav closed in an in a most audacious close encounter killed one foreign terrorist and severely injuring another. This forced the other fleeing terrorists to take refuge inside a rocky cave in the inhospitable and treacherous height of Chota Kazinag Dhar ranges. During this act of most exceptional devotion and extreme gallantry Lance Naik Bachhav was mortally injured and later succumbed to injuries.

Lance Naik Bachhav Shashikant Ganpat displayed conspicuous gallantry and act of pre-eminent valour beyond the call of duty, which prevented the escape of the terrorists and subsequently led to the elimination of eight foreign terrorists.

BARUN MITRA
Jt. Secy.

No. 165-Pres/2007.—The President is pleased to approve the award of the "Bar to Sena Medal/Army Medal" to the undermentioned personnel for the acts of exceptional courage :—

1. AR-217 Deputy Commandant Chatter Singh, Sena Medal, 45 Assam Rifles.
2. SS-39853 Captain Vinit Bajpai, Sena Medal, 2/1 Gorkha Rifles.

BARUN MITRA
Jt. Secy.

No. 166-Pres/2007.—The President is pleased to approve the award of the "Sena Medal/Army Medal" to the undermentioned personnel for the acts of exceptional courage :—

1. IC-52531 Lieutenant Colonel Pankaj Sawhney, 4 Sikh Light Infantry
2. IC-52351 Major Brijendra Singh Bhadauria, Armoured Corps/4 Rashtriya Rifles
3. IC-53297 Major Surendra Singh Chhillar, Rajput Regiment/23 Rashtriya Rifles
4. IC-56404 Major Abhishek Koushik, Brigade of the Guards/59 Rashtriya Rifles
5. IC-57775 Major Avaneesh Chambial, 4/1 Gorkha Rifles/15 Rashtriya Rifles
6. IC-58912 Major Sanjay Kapoor, Armoured Corps/ Assam Rifles
7. IC-59503 Major Ranvir Singh Dhingra, Kumaon Regiment/26 Rashtriya Rifles

8. IC-59899 Major Amar Rugge, Mechanised Infantry/ 21 Rashtriya Rifles
9. IC-60311 Major Samridh Chhibber, Army Service Corps/4 Rashtriya Rifles
10. IC-60370 Major Amit Rana, Armoured Corps/3 (NH) BN Assam Rifles
11. IC-60428 Major Upendra Kumar Srivastava, Regiment of Artillery/32 Rashtriya Rifles
12. IC-60739 Major Rajesh Kumar Sharma, 5 Jammu and Kashmir Light Infantry
13. IC-61120 Major Harmeet Singh, Grenadiers/30 Rashtriya Rifles
14. IC-61351 Major Aditya Pratap Singh, Regiment of Artillery/29 Rashtriya Rifles
15. IC-61995 Major Prashant Sadashiv Salian, Corps of Signals/50 Rashtriya Rifles
16. IC-64971 Major Abhishek Singh, Armoured Corps/ 5 Assam Rifles
17. IC-65102 Major Dheeraj Modgil, 7 Maratha Light Infantry
18. SC-00221 Major Rajendra Babu MK, Regiment of Artillery/316 Field Regiment
19. IC-60527 Captain Vijay Singh Mehta, 19 Kumaon Regiment
20. IC-61917 Captain Prakash Chandra Sirswal, 11 Brigade of the Guards
21. IC-62608 Captain Anurag Mohan, Regiment of Artillery/6 Rashtriya Rifles
22. IC-62628 Captain Anas Ahmad, 19 Kumaon Regiment
23. IC-63389 Captain Pranay Padmakar Pawar, 4 Parachut Regiment (Special Force)
24. IC-63420 Captain Prabhdeep Singh Atwal, 6 Rajput Regiment
25. IC-63471 Captain Pradeep Kumar Thapa, Corps of Engineers/39 Rashtriya Rifles
26. IC-67835 Captain Rajeev Chaudhury, EME/4 Sikh Light Infantry
27. SS-39818 Captain Amit Bhardwaj, Corps of Engineers/22 Rashtriya Rifles
28. SS-40266 Captain Santosh Kumar Roy, Corps of Signals/24 Rashtriya Rifles
29. SS-40422 Captain Shashi Dubey Narendra, Corps of Signals/55 Rashtriya Rifles
30. SS-40674 Captain Gaurav Joshi, 6 Rajput Regiment
31. IC-64424 Lieutenant Sukinder Guleria, 10 Madras Regiment
32. IC-64690 Lieutenant Apurve Warrior, 3 Parachut Regiment (Special Force)
33. IC-68043 Lieutenant Amit Kumar Singh, 2 Bihar Regiment
34. SS-41345 Lieutenant Utsav Singh, 2 Grenadiers
35. SS-41628 Lieutenant Jonathan Alexander, 4 Sikh Light Infantry
36. SS-42197 Lieutenant Martand Singh Bhadoria, 6 Rajput Regiment
37. JC-258992 Subedar Prem Lal Chandel, Regiment of Artillery/62 Rashtriya Rifles
38. JC-439175 Subedar Thulaseedharan P, Madras Regiment/8 Rashtriya Rifles
39. JC-508690 Subedar Nirmal Singh, 10 Sikh Light Infantry
40. JC-508980 Subedar Balwinder Singh, 158 Infantry Battalion (TA)(H&H) Sikh Light Infantry
41. JC-519644 Subedar Om Parkash, 17 Dogra Regiment
42. JC-539327 Subedar Rajbir Singh, 19 Kumaon Regiment
43. JC-539708 Subedar Prem Chand, 19 Kumaon Regiment
44. JC-634543 Subedar Yam Bahadur Mukhia, 7/11 Gorkha Rifles
45. JC-469713 Naib Subedar Girdhari Lal, 9 Rajputana Rifles
46. 2682080 Havildar Jagdish Chander, 2 Grenadiers (Posthumous)
47. 2684875 Havildar Bariya Parbat Jetha, Grenadiers/ 12 Rashtriya Rifles
48. 284423 Havildar Anand Kumar, Rajputana Rifles/ 43 Rashtriya Rifles (Posthumous)
49. 2885874 Havildar Vijay Singh, Rajputana Rifles/43 Rashtriya Rifles
50. 2987880 Havildar Subhash Chandra, 23 Rajput Regiment
51. 3390186 Havildar Gurmohan Singh, 21 Sikh Regiment
52. 398574 Havildar Kamal Nayan, Dogra Regiment/62 Rashtriya Rifles
53. 15124549 Havildar Jitendra Kumar Mishra, Regiment of Artillery/172 Field Regiment

54. 268553 Lance Havildar Bansi Lal, Grenadiers/29 Rashtriya Rifles

55. 2485321 Naik Surender Kumar Rana, Punjab Regiment/22 Rashtriya Rifles

56. 2991831 Naik Manak Singh, 23 Rajput Regiment

57. 3188007 Naik Jaipal Singh, 7 Jat Regiment (Posthumous)

58. 4474644 Naik Avtar Singh, 11 Sikh Light Infantry

59. 5452070 Naik Mohan Singh Gurung, 1/5 Gorkha Rifles (Frontier Force) (Posthumous)

60. 9420510 Naik Ramesh Kumar Tamang, 7/11 Gorkha Rifles

61. 14420909 Naik Chandrakesh Chaubey, Regiment of Artillery/41 Rashtriya Rifles

62. 14424915 Naik Bodedda Jagadeswara Rao, Regt of Artillery/138 Medium Regiment

63. 2997882 Lance Naik Malkhan Singh, 23 Rajput Regiment

64. 3997184 Lance Naik Sewa Dev, Dogra Regiment/62 Rashtriya Rifles

65. 4569140 Lance Naik Raj Kanwal Singh, Mahar Regiment/1 Rashtriya Rifles (Posthumous)

66. 9101117 Lance Naik Mehmood Shah, 3 Jammu and Kashmir Light Infantry

67. 9422289 Lance Naik Phurba Tshering Sherpa, 7/11 Gorkha Rifles

68. 15142965 Lance Naik Mahendra Singh Yadav, Regiment of Artillery/42 Field Regiment

69. 2607420 Sepoy Ittamsetti Krishna Babu, Madras Regiment/8 Rashtriya Rifles (Posthumous)

70. 2997651 Sepoy Dinesh Singh, Rajput Regiment/58 Rashtriya Rifles

71. 2999366 Sepoy Kaushalandra Singh, 19 Rajput Regiment

72. 4191441 Sepoy Thakur Singh, Kumaon Regiment/ 26 Rashtriya Rifles

73. 4366787 Sepoy Lalrinawma, Assam Regiment/59 Rashtriya Rifles

74. 4369136 Sepoy Rinku Phukan, Assam Regiment/82 Moutain Brigade Camp

75. 10213253 Sepoy Shailesh Kumar, 113 Infantry Battalion (TA) Rajput (Posthumous)

76. 10213393 Sepoy Sandeep Kr Poddar, 113 Infantry Battalion(TA) Rajpur (Posthumous)

77. 12944593 Sepoy Mohd. Shariff, 159 Infantry Battalion (TA) (H&H) Dogra/23 Rashtriya Rifles

78. 14927222 Sepoy Jabir Khan, Mechanised Infantry/9 Rashtriya Rifles

79. 14928435 Sepoy Jaswinder Singh, Mechanised Infantry/9 Rashtriya Rifles

80. 14933805 Sepoy Ravindra Singh, Mechanised Infantry/50 Rashtriya Rifles

81. 4085407 Rifleman Harpal Singh Negi, Garhwal Rifles/14 Rashtriya Rifles

82. 4086486 Rifleman Bhagwan Singh, 5 Garhwal Rifles

83. 9104407 Rifleman Gohar Ali Khan, Jammu & Kashmir Light Infantry/19 Rashtriya Rifles

84. 9107560 Rifleman Mohamad Sayed Mantoo, Jammu & Kashmir Rifles/18 Rashtriya Rifles

85. 9422444 Rifleman Tashi Lama, 7/11 Gorkha Rifles

86. 9423805 Rifleman Bir Bahadur Limbu, 7/11 Gorkha Rifles

87. 9424796 Rifleman Roshan Rai, 1/11 Gorkha Rifles (Posthumous)

88. 12974366 Rifleman Abdul Rahim Dar, 162 Infantry Battalion (TA) Jak LI/14 Rashtriya Rifles

89. 12974389 Rifleman Nazir Ahmad Wani, 162 Infantry Battalion (TA) Jak LI/2 Rashtriya Rifles

90. G/3300733 Rifleman Md Ibrahim Khan, 33 Assam Rifles

91. G/3300911 Rifleman Devi Singh Vishkarma, 33 Assam Rifles

92. 15324626 Sapper Alukka Varghese Satto, Corps of Engineers/44 Rashtriya Rifles

93. 13622532 Paratrooper Hang Thong Lamra, 4 Parachut Regiment (Special Force)

94 13624627 Paratrooper Vinay Kumar, 21 Parachut Regiment (Special Force)

95. 15487058 Sowar Joginder Singh, Armoured Corps/ 33 Rashtriya Rifles

96. 15491427 Sowar Sandeep Singh Gill, Armoured Corps/33 Rashtriya Rifles

97. 15163004 Gunner Joy Kumar Rabha, Regiment of Artillery/172 Field Regiment

98. 2694028 Grenadier Virender Singh, Grenadiers/39 Rashtriya rifles (Posthumous)

99. 15615069 Guardsman Naresh Kumar, Brigade of the Guards/59 Rashtriya Rifles

BARUN MITRA
Jt. Secy.

No. 167-Pres/2007.—The President is pleased to approve the award of the "Nao Sena Medal/Navy Medal" to the undermentioned personnel for the acts of exceptional courage :—

1. Lt Cdr Nitin Gupta, 04908-B.
2. Lieutenant RP Jagan Mohan (51700-Z)
3. RS Bani PO CDI (173998-A)
4. Sudhir, ME 1, (SD), 135472-T.

BARUN MITRA
Jt. Secy.

No. 168-Pres/2007.—The President is pleased to approve the award of the "Vayu Sena Medal/Air Force Medal" to the undermentioned personnel for the acts of exceptional courage :—

1. Wing Commander Subroto Kundu (20781) Flying (Pilot).
2. Wing Comander Jitender Yadav (21009) Flying (Pilot).
3. Wing Commander Sartaj Bedi (21024) Flying (Pilot)
4. Wing Commander Rajesh Ranwan (21812) Flying (Pilot)
5. Squadron Leader Bhupender Singh Sehrawat (24203) Flying (Pilot)
6. 768541 Corporal Prasanta Kumar Pati Engine Fitter

BARUN MITRA
Jt. Secy.

No. 161-Pres/2007.—The President of India is pleased to approve the confirment of following Jeevan Raksha Padak series of awards for the year 2007 on the undermentioned persons :—

Sarvottam Jeevan Raksha Padak

1. Shri Siju David, Kerala
2. Shri Pratap Rai, Sikkim
3. Master V. Teja Sai (Posthumous), Andhra Pradesh
4. Master C. V. S. Durga Doondieswar (Posthumous), Andhra Pradesh

Uttam Jeevan Raksha Padak

1. Shri Michael N. George, Kerala
2. Shri Ravindra Sambhaji Desai, Maharashtra
3. Shri Damodar Prasad Sharma, Rajasthan
4. Master Yogesh Kumar Jangid, Rajasthan
5. Smt. Manzuma, Uttar Pradesh
6. Shri Nagender, Delhi
7. Shri Manoj Chohan (Posthumous), Madhya Pradesh

Jeevan Raksha Padak

1. Shri Monimugdha Bora, Assam
2. Shri Vyas Parag Parasadray, Gujarat
3. Praveen Kumar, Himachal Pradesh
4. Shri Mustaffa Muaszzam, Jammu & Kashmir
5. Shri Sanjay Somanna Wadeyar, Karnataka
6. Shri Markose Joseph, Kerala
7. Shri Sadashiv Bapu Ambi, Maharashtra
8. Shri Abubakar Ali Chaouse, Maharashtra
9. Shri Rakesh Salunke, Maharashtra
10. Shri Shyam Gangurde, Maharashtra
11. Master Comingstar Diengngan, Meghalaya
12. Shri Nicholas Tyrsa, Meghalaya
13. Shri M. C. Lalthlengliana, Mizoram
14. Shri Kumar Pujari, Orissa
15. Shri Rakesh Das Vaishnav, Rajasthan
16. Smt. Pravesh Devi Dagur, Rajasthan
17. Selvi Sonia, Tamil Nadu
18. Smt. Kanchana, P, Tamil Nadu
19. Shri P. Abdul Manaf, Andaman & Nicobar
20. Shri Virender Kumar, Haryana
21. Smt. Jarina Khatoon, West Bengal

22. Kumari Asma Ayyub Khan, Maharashtra
23. Kumari Deepa Kumari, Rajasthan
24. Master Jithin P. V., Kerala
25. Master Bijesh M, Kerala
26. Shri Parth S. Sutaria, Maharashtra
27. Kumari Pushpa, Chhattisgarh
28. Master Lahringam Anal, Manipur
29. Kumari Anita Singh Lodh, Madhya Pradesh
30. Kumari Kashika Singh, Chandigarh
31. Kumari Paonam Babyrose Devi, Manipur
32. Master Sudhir Jakhar, Rajasthan
33. Shri Pavan Kumar Parashar, Rajasthan
34. Master Rajender Kumar, Rajasthan

BARUN MITRA
Jt. Secy.

MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS

New Delhi, the 23rd October 2007

No. PFG (487)/1989-Admn. II.—In exercise of the powers conferred by Clause (ii) of Sub-Section (1) of Section 209A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), the Central Government hereby authorize Shri B. C. Meena, Deputy Director (Inspection) in the Office of Regional Director (Northern Region), Ministry of Corporate Affairs, Noida for the purpose of the said Section 209-A.

J. S. GUPTA
Under Secy.

No. PFG(365)/78-Admn. II.—In exercise of the powers conferred by Clause (ii) of Sub-Section (1) of Section 209A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), the Central Government hereby authorize Shri Har Lal, Joint Director (Inspection) in the Office of Regional Director (Northern Region), Ministry of Corporate Affairs, Noida for the purpose of the said Section 209-A.

J. S. GUPTA
Under Secy.

MINISTRY OF TEXTILES
OFFICE OF THE DEVELOPMENT COMMISSIONER (HANDICRAFTS)

New Delhi-110 066, the 15th October 2007

RESOLUTION

No. K-12012/5/16/2006-P&R/7215.—The All-India Handicrafts Board was reconstituted vide resolution of even No. dated 8th September, 2006 for a tenure of two years. The Government of India has decided to induct Dr. Gonuguntla Prasad, H. No. 8-19-114/A, Line Mangaldas Nagar, Tadikonda Street, Guntur (Andhra Pradesh) as a new non official member of All-India Handicrafts Board while retaining all officials and non-officials members of the existing All-India Handicrafts Board constituted vide resolution dated 8th September, 2006, 23rd October, 2006, 22nd & 27th November, 2006, 5th, 12th, 21st & 22nd December, 2006, 5th & 10th January, 2007, 1st & 14th February, 2007, 2nd, 7th & 9th March, 2007, 8th, 16th, 19th May, 2007, 25th July, 2007, 3rd, 29th August, 2007 & 11th September, 2007, 17th September & 24th September, 2007.

The present strength of the Board shall be 86 Members comprising of Chairman, 24 official Members including Member Secretary and 61 non-official Members, in the reconstituted All-India Handicrafts Board.

All other terms and conditions recorded in the resolution dated 8th September 2006 will, however, remain same and unchanged.

ORDER

Ordered that a copy of this resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India.

Dr. SANDEEP SRIVASTAVA
Additional Development Commissioner (Handicrafts)

MINISTRY OF CHEMICALS AND FERTILIZERS
(DEPARTMENT OF FERTILIZERS)

New Delhi, the 25th October 2007

RESOLUTION

No. 12019/7/2005-FPP.—The Fertilizer Industry Coordination Committee was reconstituted vide Ministry of Chemicals and Fertilizers' Resolution No. 12019/5/98-FPP dated 13.3.2003 to administer and operate the New Pricing Scheme for urea units. Consequent to the vacancy arising from completion of their tenure as Industry Members by Sh. Homi R. Khursokhan, Managing Director, Tata Chemicals Limited (TCL) and Shri B. D. Sinha, MD, KRIBHCO in the Fertilizer Industry Coordination Committee (FICC) on 4.10.2007, it has been decided to appoint Shri G. S. Mangat, Chairman and Managing Director, National Fertilizers Ltd., Noida and Shri K. S. Raju, Chairman and Managing Director, MD Nagarjuna Fertilizers and Chemicals Ltd., Hyderabad as Member in the Fertilizer Industry Coordination Committee (FICC).

The appointment of S/Shri G. S. Mangat, CMD, NFL, Noida and K. S. Raju, CMD NFCL, Hyderabad as industry member in FICC will be effective from the date of issue of the Resolution and for a period of two years or until further orders, whichever is earlier.

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to the Lok Sabha Secretariat and Rajya Sabha Secretariat and the Ministries and Departments of the Government of India concerned.

2. Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

DEEPAK SINGHAL
Jt. Secy.

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित
एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2007
PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND
PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2007